ख़िलाफ़त का महान स्थान, उसकी बरकतें और समय के ख़लीफ़ा से प्रेम एवं उसका आज्ञापालन और हमारा दायित्व

प्रकाशक

नज़ारत नश्र व इशाअत क़ादियान

Khilafat Ka Azimush Shan Maqam-o-Martaba,
Is ki Barakat, Khalifa-e-Waqt ki Mahabbat-o-Ita'at
Aur Hamari Zimmadarian

(in Hindi)

وَاعۡتَصِمُوۡا بِحَبۡلِ اللّٰہِ جَمِیۡعًا وَّلَا تَفَرَّقُوۡا (आले इमरान-104)

तुम अल्लाह की (ख़िलाफ़त रूपी) रस्सी को मज़्बूती से पकड़ लो और टुकड़े-टुकड़े मत हो

ख़िलाफ़त का महान स्थान, उसकी बरकतें और समय के ख़लीफ़ा से प्रेम एवं उसका आज्ञापालन और हमारा दायित्व

प्रकाशक

नज़ारत नश्र व इशाअत क़ादियान

नाम पुस्तक	: ख़िलाफ़त का महान स्थान, उसकी बरकतें और समय के ख़लीफ़ा से प्रेम एवं उसका आज्ञापालन और हमारा दायित्व
संकलन कर्ता	: सैयद आफ़ताब अहमद नैयर, मुहम्मद आरिफ़ रब्बानी
अनुवादक	: अली हसन एम ए, एच ए
टाईप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2019 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) 2019
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद अली हसन साहिब ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए., मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम मोहियुद्दीन फ़रीद एम्. ए. और मुकर्रम इब्नुल मेहदी लईक़ एम्. ए. ने इसका रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

प्राक्कथन

जमाअत अहमदिया की यह एक विशिष्टता है कि इसमें हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद 108 वर्षों से ख़िलाफ़त का मुबारक निज़ाम जारी है। जमाअत अहमदिया पर यह ख़ुदा तआला का बहुत बड़ा एहसान है। शेष दुनिया इस नेमत से वंचित है और ख़लीफ़ा बनाने के लिए पूरी कोशिश कर रही है। सच तो यह है कि जब तक ख़ुदा तआला ख़ुद न चाहे लोगों की हज़ार कोशिशों से भी यह निज़ाम जारी नहीं हो सकता।

अल्लाह के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया वह भाग्यशाली जमाअत है जिसमें उसने यह बाबरकत निज़ाम जारी किया है। जिसके द्वारा पूरी दुनिया में नए-नए संचार साधनों द्वारा इस्लामी शिक्षा और संस्कार के प्रचार-प्रसार का काम बड़ी तीव्रगति से हो रहा है। (इस पर अल्लाह तआला की बहुत-बहुत प्रशंसा)

अत: ख़िलाफ़त का महत्त्व और उससे लाभ को देखते हुए लोगों को अपने दायित्व की ओर ध्यान दिलाने हेतु नज़ारत नश्र-व-इशाअत क़ादियान ने वर्तमान ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह पंचम की ओर से मन्ज़ूर शुदा मज्लिस शूरा 2015 ई. के प्रस्तावित विषय "ख़िलाफ़त का स्थान और उसके लाभ और उससे प्रेम और आज्ञापालन और हमारे दायित्व" पर एक पुस्तिका संकलित करवाया है। जिसे आदरणीय मौलवी सैयद आफ़ताब अहमद साहिब नैयर और आदरणीय मौलवी मुहम्मद आरिफ़ रब्बानी साहिब मुरब्बियान-ए-सिलसिला ने क्रमबद्ध और संकलित किया है। अल्लाह

तआला उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। सैयदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह पंचम की मंज़ूरी से यह पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इसे हर दृष्टि से लोगों के लिए लाभप्रद बनाये। तथास्तु

नाज़िर नश्र व इशाअत
क़ादियान

परिचय

अल्लाह तआला ने मनुष्य की उत्पत्ति के उद्देश्य की पूर्ति हेतु अवतारों के भेजने का एक अनवरत सिलसिला जारी किया। अतः हर युग में अल्लाह तआला की ओर से नबी अवतरित हुए जो ख़ुदा के ख़लीफ़ा कहलाये और लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए भरपूर प्रयत्न करते रहे। अल्लाह के यह दूत एक लम्बी कोशिश के बाद एक इलाही जमाअत क़ायम करके मानवीय प्रकृति के अनुसार अन्य मनुष्यों की भाँति इस नश्वर संसार को छोड़कर परलोक सिधार गये। (इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन)

अवतारों के स्वर्ग सिधारने के पश्चात् उनके अनुयायियों पर दुःखों का एक पहाड़ टूट पड़ता है। दुश्मन उनकी इस हालत को देखकर ख़ुशी के गीत गाने लग जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में ख़ुदा तआला उनको असहाय नहीं छोड़ता बल्कि उनकी सहानुभूति के लिए देहान्त पाने वाले अवतार का एक नायब खड़ा कर देता है जो अनुयायियों की गिरती हुई उमंग और साहस को सँभाल लेता है। फिर उसके अनुयायियों की जमाअत अपने मिशन और कामों को पूरा करने के लिए धीरे-धीरे डगर पर आ जाती है। अतः ख़ुदा के इस प्राकृतिक विधानानुसार नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ भी ऐसा ही हुआ और ख़ुदा ने उनके देहान्त के बाद हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु को खड़ा करके ख़िलाफ़त-ए-राशिदा क़ायम फ़रमाया, जो तीस वर्षों तक जारी रही और अन्ततः

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार यह सिलसिला आख़िरी ज़माने(अर्थात् कलियुग) तक के लिए टूट गया। तत्पश्चात् अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आख़िरी युग में नबूवत् के पथ पर पुनः ख़िलाफ़त-ए-राशिदा के सिलसिला का क़याम होना था। इस संक्षेप का सविस्तार स्पष्टीकरण यह है कि जब सूरः जुमा की निम्नलिखित आयत अवतरित हुई कि -

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ

(सूरः जुमा आयत 3-4)

ख़ुदा ने अरबों में, उन्हीं में से अपना एक रसूल भेजा है जो उन्हें ख़ुदा की बातें सुनाता है और उन्हें स्वच्छ और पवित्र करता है और किताब और हिकमत की बातें सिखाता है। हालाँकि इससे पहले वे खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए थे। उन्हीं की तरह एक दूसरा गिरोह भी है जिसको हमारा यह रसूल (अपने एक हमरूप के द्वारा) प्रशिक्षित करेगा, जो अभी तक दुनिया में प्रकट होकर सहाबा[रज़ि॰] के गिरोह से नहीं मिला। लेकिन भविष्य में आने वाले एक युग में अवश्य प्रकट हो जाएगा।

यह सुनकर सहाबा ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आश्चर्यचकित होकर पूछा कि वे कौन लोग होंगे जिनमें (प्रतिरूपी दृष्टि से) आपका पुनः जन्म होगा। आपने हज़रत सलमान फ़ारसी[रज़ि॰] के कन्धे पर हाथ रखकर फ़रमाया कि -

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ مِنْ هٰؤُلَآءِ

(बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर बाब तफ़्सीर सूरः जुमा)

यदि किसी ज़माने में ईमान दुनिया से उठकर सुरैया सितारे पर भी चला गया तो फ़ारस के रहने वाले इन लोगों में से एक व्यक्ति उसे पुनः धरती पर ले आएगा। फिर एक दूसरे अवसर पर उसी सलमान के सम्बन्ध में फ़रमाया कि:-

سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ

(तिबरानी कबीर व मुस्तदरिक हाकिम ब हवाला जामिउस्सग़ीर)

सलमान हम में से है अर्थात् हमारे अहल-ए-बैत में से है।

इस हदीस में इस ओर संकेत है कि आने वाला महदी फ़ारसी मूल में से होगा और इसी से वह भविष्यवाणी भी पूरी हो गई कि महदी अहल-ए-बैत में से होगा।

अतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ारसी मूल में से आख़िरी युग में आने वाले अपने एक प्रतिरूप की भविष्यवाणी करने के बाद कुछ अन्य हदीसों में उसको स्पष्ट करते हुए और उस ज़माने के हालात का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाया कि:-

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ

(सहीह बुख़ारी किताब अहादीसुल अम्बिया बाब नुज़ूल ईसा इब्नि मरियम)

उस समय तुम्हारा क्या हाल होगा जब इब्नि मरियम तुम में अवतरित होगा और क्या तुम जानते हो कि वह इब्नि कौन होगा? वह तुम्हारा इमाम होगा और (हे उम्मती लोगो) तुम ही में से पैदा होगा।

फिर एक हदीस में और स्पष्ट करते हुए फ़रमाया कि:-

وَلَا الْمَهْدِیُّ اِلَّا عِیْسَی ابْنَ مَرْیَمَ

(इब्नि माजः बाब शिद्दतुज़्ज़मान पृ. 257 मिस्री,

कन्ज़ुल उम्माल जिल्द-7 पृष्ठ - 156)

ईसा इब्नि मरियम के सिवा कोई महदी नहीं, अर्थात् मसीह व महदी एक ही वजूद के दो नाम होंगे। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस आने वाले इमाम महदी के अवतरण काल की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया कि:-

اِذَا مَضَتْ اَلْفٌ وَّ مِأَتَانِ وَ اَرْبَعُوْنَ سَنَةً یَبْعَثُ اللّٰہُ الْمَهْدِیَّ

(अल्-नजमुस्साक़िब जिल्द-2 पृ.209)

जब एक हज़ार दो सौ चालीस वर्ष बीत जाएँगे जो अल्लाह तआला महदी को अवतरित करेगा।

फिर उस मसीह और महदी के स्थान को बयान करते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-

لَیْسَ بَیْنِیْ وَ بَیْنَهٗ نَبِیٌّ یَعْنِیْ عِیْسٰی وَ اِنَّهٗ نَازِلٌ فَاِذَا رَأَیْتُمُوْهُ فَاعْرِفُوْهُ

(अबू दाऊद किताबुल मलाहम बाब ख़ुरूज दज्जाल)

आने वाले मसीह और मेरे मध्य कोई दूसरा नबी नहीं है। मसीह अवश्य तुम में अवतरित होगा और जब वह अवतरित हो तो तुम उसे देखते ही पहचान लेना।

फिर एक हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आने वाले मसीह को चार बार नबीयुल्लाह कहा है। अतः आप फ़रमाते हैं कि:-

وَ یُحْصَرُ نَبِیُّ اللّٰہِ عِیْسٰی وَ اَصْحَابُهٗ۔ فَیَرْغَبُ نَبِیُّ اللّٰہِ عِیْسٰی وَ اَصْحَابُهٗ۔ ثُمَّ یَهْبِطُ نَبِیُّ اللّٰہِ عِیْسٰی وَ اَصْحَابُهٗ۔ فَیَرْغَبُ

نَبِیُّ اللّٰہِ عِیْسٰی و اَصْحَابُہٗ اِلَی اللّٰہ۔۔الخ

(सहीह मुस्लिम बाब ज़िकर-ए-दज्जाल)

जब मसीह मौऊद याजूज माजूज के ज़ोर के ज़माना में आएगा तो आने वाला अल्लाह का नबी मसीह और उसके सहाबी दुश्मन की भीड़ में फँस जाएँगे.......फिर अल्लाह का नबी मसीह और उसके सहाबी ख़ुदा के समक्ष गिड़गिड़ाकर दुआ करेंगे.........जिसके परिणामस्वरूप अल्लाह का नबी मसीह और उसके सहाबी मुश्किलों की भँवर से निकलकर दुश्मन के कैम्प में घुस जाएँगे, फिर वहाँ नए प्रकार की मुश्किलें सामने आएँगी.........फिर अल्लाह का नबी मसीह और उसके सहाबी पुनः ख़ुदा के समक्ष गिड़गिड़ाकर दुआ करेंगे तो ख़ुदा उनकी मुश्किलों को दूर कर देगा।

इस हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आने वाले मसीह को चार बार नबीयुल्लाह कहा है।

उपरोक्त भविष्यवाणियों से यह स्पष्ट है कि अन्तिम युग में अर्थात् तेरहवीं शताब्दी हिज्री के अन्तकाल में मसीह व महदी का प्रादुर्भाव होगा जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्रतिरूप होगा और ख़ुदा उसको नबूवत् के पद से सुशोभित करेगा। ठीक उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने तेरहवीं शताब्दी हिज्री के अन्त में ख़ुदा से आदेश पाकर मसीह व महदी होने का दावा किया और घोषणा की कि अल्लाह तआला ने मुझे संबोधित करके फ़रमाया है कि:-

جَعَلْنَاكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ

"हमने तुझे मसीह इब्नि मरियम बना दिया है।"

(इज़ाल: औहाम पृ. 632)

इसी तरह अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूर्णतः अनुसरण में भविष्यवाणियों के अनुसार आपको उम्मती नबी का स्थान प्रदान किया।

अतः आप अपने इस स्थान को स्पष्ट करते हुए फ़रमाते है:-

> "नबूवत हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ख़त्म हो गयी और क़ुर्आन करीम के अतिरिक्त (हमारी) कोई पुस्तक नहीं, वह समस्त पूर्व पुस्तकों में से श्रेष्ठ है और शरीअत-ए-मुहम्मदी के अतिरिक्त (हमारी) कोई शरीअत नहीं। निःसन्देह रूप से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुँह से मेरा नाम नबी रखा गया है जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कामिल पैरवी की बरकतों में से एक प्रतिविम्बित विषय है। मैं अपने आप में कोई ख़ूबी नहीं पाता बल्कि जो कुछ भी मैंने पाया वह उस पवित्र वजूद से पाया है और अल्लाह के निकट मेरी नबूवत् से तात्पर्य केवल ख़ुदा से अत्यधिक संवाद और संबोधन का पाना है और जो इससे ज़्यादा का दावा करे या अपने आप को कुछ महत्व दे या अपनी गर्दन को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जुए से बाहर निकाले (अर्थात् आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत से अपने आप को बाहर समझे -अनुवादक) उस पर ख़ुदा की लानत है। हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ात्मुन्नबीयीन हैं

और उन पर रसूलों का सिलसिला ख़त्म हो गया, अब किसी के लिए यह जायज़ नहीं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद (बिना पैरवी के) स्वतन्त्र नबूवत् का दावा करे। अब ख़ुदा से केवल प्राचुर्य संवाद व संबोधन का सिलसिला शेष है जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अनुसरण के साथ सशर्त है, इससे बाहर कुछ भी नहीं। और ख़ुदा की क़सम! मुझे यह स्थान मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नूर की किरणों की पैरवी से ही मिला है और अल्लाह तआला ने मेरा नाम प्रतिरूपी दृष्टि से नबी रखा है न कि स्वजरूपी दृष्टि से। इसलिए यहाँ अल्लाह या रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ग़ैरत भड़कने का कोई स्थान नहीं, क्योंकि मेरी (आध्यात्मिक) शिक्षा-दीक्षा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परों के नीचे हुई है और मेरा क़दम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पगचिन्हों के अनुसरण में है और मैंने कोई बात अपनी ओर से नहीं की, बल्कि अल्लाह तआला ने जो मुझे आदेश दिया उसका अनुसरण किया है और इसके बाद मैं लोगों की धमकियों से नहीं डरता।"

(अरबी इबारत इस्तिफ़्ता से अनुवादित, रुहानी ख़ज़ायन जिल्द-22 पृ.688-689)

आप ने सन् 1889 ई. में एक पवित्र जमाअत की बुनियाद रखी

और उसका नाम जमाअत अहमदिया रखा। आपने सारा जीवन इस्लाम के प्रचार-प्रसार और विजय के लिए समर्पित कर दिया। आपकी 80 से अधिक रचनाएँ इस विषय का स्पष्ट प्रमाण हैं। इसी तरह अपनों और परायों की गवाहियाँ भी मौजूद हैं जिनसे दुनिया पर यह स्पष्ट हो गया कि किस तरह आपने इस्लाम के विजय के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

अल्लाह तआला की इच्छानुसार आप ने अपने कर्तव्यों को बड़ी सुन्दरता से निभाया और मरते दम तक अपना हर एक पल ख़ुदा के इस काम के लिए समर्पित कर दिया। आपके देहान्त पर दुश्मन यह समझने लगा कि अब आपके उद्देश्य और जमाअत का अन्त हो जाएगा। लेकिन अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी कर दिया। क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला का यह वादा मौजूद है कि:-

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

(सूरः अल-नूर आयत 56)

अनुवाद- तुम में से जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनसे अल्लाह तआला ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा, जैसा कि उसने उन से पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया। फिर उनके लिए उनके धर्म को, जो उसने उनके लिए पसन्द

किया है अवश्य स्थायित्व प्रदान करेगा और उनकी ख़ौफ़ की हालत को अमन में बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे और किसी को मेरा भागीदार नहीं ठहराएँगे। जो लोग इसके बाद भी इन्कार करेंगे वे दुराचारी ठहराए जाएँगे।

हज़रत अब्दुर्रहमान इब्नि सहल[रज़ि॰] बयान करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः-

"हर नबूवत् के बाद ख़िलाफ़त होती है"

(कन्जुल उम्मल किताबुल फ़ितन, फ़सल फ़ी मुतफ़र्रिक़ात अल-फ़ितन जिल्द-11 पृ.115 हदीस नं. 31444)

हज़रत हुज़ैफ़ा बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः-

"तुम में नबूवत् क़ायम रहेगी फिर नबूवत के पथ पर ख़िलाफ़त क़ायम होगी। फिर कष्टदायक बादशाहत क़ायम होगी। फिर इसके बाद अनीति और जब्र से काम लेने वाली बादशाहत क़ायम होगी। इसके बाद नबुव्वत के पद पर ख़िलाफ़त क़ायम हो गई इसके बाद आप ख़ामोश हो गए।"

(मुस्नद अहमद हदीस 17680)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद के देहान्त के पश्चात् ख़िलाफ़त अहमदिया का मुबारक निज़ाम जारी हुआ। जिसको हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने क़ुदरत-ए-सानिया(दूसरी क़ुदरत) का नाम दिया।

अतः हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया का शुभ समाचार देते हुए फ़रमाते हैः-

"यह ख़ुदा तआला का विधान है और जब से उसने मनुष्य को धरती पर पैदा किया है वह इस विधान को सदैव प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों और रसूलों की सहायता करता है और उनको विजय देता है। जैसा कि वह फ़रमाता है किः-

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیۡ (सूरः अल-मुजादलः आयत 22)

(अनुवाद- ख़ुदा ने यह अटल निर्णय कर रखा है कि वह और उसके नबी ही विजयी होंगे।)

और विजय से तात्पर्य यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा के मौजूद होने का प्रमाण धरती पर पूर्णतः सिद्ध हो जाए ......लेकिन उनके हाथ से उसको चर्मोत्कर्ष तक नहीं पहुँचाता बल्कि ऐसे समय में उनको मृत्यु देकर जो सामान्यतः एक नाकामी का डर अपने साथ रखता है विरोधियों को हँसी, ठट्‌ठे, व्यंग और लान-तान करने का अवसर दे देता है और जब वे हँसी ठट्‌ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता है और ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्‌देश्य जो किसी हद तक अधूरे रह गए थे अपने चर्मोत्कर्ष को पहुँचते हैं। तात्पर्य यह कि वह दो प्रकार की क़ुदरतें प्रकट करता है। (1) प्रथम यह कि वह स्वयं

नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। (2) द्वितीय यह कि ऐसे समय में जब नबी के देहान्त के पश्चात् कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता है और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जाएगी और स्वयं जमाअत के लोग भी दुविधा में पड़ जाते हैं और हताश हो जाते हैं और कई दुर्भाग्यशाली विमुखता की राह अपना लेते हैं तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली क़ुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को सँभाल लेता है। अतः जो अन्त तक धैर्य रखता है वह ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है। जैसा कि हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में हुआ कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु एक असमय मृत्यु समझी गई और बहुत से नासमझ देहाती विमुख हो गए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी मारे ग़म के दीवानों की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को खड़ा करके पुनः अपनी क़ुदरत का नमूना दिखाया और इस्लाम को मिटने से बचा लिया और उस वादे को पूरा किया जो फ़रमाया था कि:-

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا

(सूरः अल-नूर आयत 56)

इसलिए हे प्यारो! जब पुरातन से अल्लाह का विधान यही है कि वह हमेशा से दो क़ुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को नाकाम करके दिखलावे। इसलिए अब सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपने पुरातन विधान को छोड़ दे। इसलिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे सामने बयान की है दु:खी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि वह दायमी है.......मैं ख़ुदा की ओर से एक क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ और मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ दूसरे वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का द्योतक होंगे। इसलिए तुम ख़ुदा की दूसरी क़ुदरत के इन्तिज़ार में इकट्ठे होकर दुआ करते रहो और चाहिए कि हर एक नेकों का गिरोह हर एक देश में इकट्ठे होकर दुआओं में लगा रहे ताकि दूसरी क़ुदरत आसमान से उतरे और तुम्हें दिखावे कि तुम्हारा ख़ुदा ऐसा सामर्थ्यवान् ख़ुदा है.....।"

(अल-वसीयत, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20 पृ. 304-306)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है:-

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रचनाओं से यह सिद्ध है कि आपके बाद उस तरह ख़िलाफ़त का सिलसिला क़ायम किया जाएगा जिस तरह आँहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद क़ायम किया गया और आपके ख़लीफ़ों की आज्ञापालन अनिवार्य होगी और सिलसिला के सच्चे नुमाइन्दे वही होंगे।"

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत् जिल्द-3 पृ.601)

उपरोक्त भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम के देहान्त के पश्चात् 27 मई सन् 1908 ई. को हज़रत हाफ़िज़ हकीम नूरुद्दीन साहिब पहले ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। फिर उनके देहान्त पर सन् 1914 ई. को हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब दूसरे ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। फिर उनके देहान्त के पश्चात् सन् 1965 ई. को हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब तीसरे ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। फिर उनके देहान्त के पश्चात् सन् 1982 ई. को हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब चौथे ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। फिर उनके देहान्त के पश्चात् सन् 2003 ई. को हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब पाँचवें ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए, जिनके मार्गदर्शन में आज जमाअत अहमदिया तरक़्क़ियों के मार्ग में तेज़ी से बढ़ती जा रही है।

अल्लाह तआला हमारे प्यारे इमाम को स्वास्थ्य, शान्ति और कर्मठमय जीवन प्रदान करे और लम्बे समय तक हम पर आपकी छत्रछाया रहे और आपके कार्यकाल में सच्चे इस्लाम व अहमदियत की विश्व में पताका लहराए। आमीन

अल्लाह के फ़ज़्ल से यह सिलसिला बढ़ता चला जाएगा और उसकी ओर से इस क़ुदरत-ए-सानिया के द्योतक हमेशा उसकी इच्छानुसार खड़े होते रहेंगे। क्योंकि हमारे खुदा के पास किसी प्रकार

की कोई कमी नहीं है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस सन्दर्भ में एक जगह फ़रमाते है:-

> "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं तो जाता हूँ लेकिन ख़ुदा तआला तुम्हारे लिए क़ुदरत-ए-सानिया भेज देगा, मगर हमारे ख़ुदा के पास क़ुदरत-ए-सानिया ही नहीं उसके पास क़ुदरत-ए-सालिसा भी है और उसके पास क़ुदरत-ए-राबिआ भी है। क़ुदरत-ए-ऊला के बाद क़ुदरत-ए-सानिया ज़ाहिर हुई और क़ुदरत-ए-सानिया के बाद क़ुदरत-ए-सालिसा आएगी और क़ुदरत-ए-सालिसा के बाद क़ुदरत-ए-राबिआ आएगी और क़ुदरत-ए-राबिआ के बाद क़ुदरत-ए-ख़ामिसा आएगी और क़ुदरत-ए-ख़ामिसा के बाद क़ुदरत-ए-सादिसा आएगी और ख़ुदा तआला का हाथ लोगों को चमत्कार दिखाता चला जाएगा और दुनिया की कोई बड़ी से बड़ी ताक़त और अत्यन्त शक्तिशाली बादशाह भी इस सिलसिला और उद्देश्य के रास्ते में खड़ा नहीं हो सकता। जिस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहली ईंट बनाया और मुझे उसने दूसरी ईंट बनाया। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार फ़रमाया कि दीन(अर्थात् इस्लाम-अनुवादक) जब खतरे में होगा तो अल्लाह तआला उसकी रक्षा के लिए फ़ारस

मूल के लोगों में से कुछ लोगों को खड़ा करेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उनमें से एक थे और एक मैं हूँ लेकिन अरबी शब्द "रिजाल" के अन्तर्गत सम्भव है कि फ़ारसी मूल के लोगों में से कुछ और लोग भी ऐसे हों जो इस्लाम की महानता को क़ायम रखने और उसकी बुनियादों को मज़बूत करने के लिए खड़े हों।"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 23-29 मई सन् 2014 ई.)

इतिहास इस बात का गवाह है कि क़ुदरत-ए-सानिया के इन द्योतकों के मार्गदर्शन में जमाअत अहमदिया विकास के मार्गों में तेज़ी से आगे से आगे बढ़ती जा रही है। आज विश्व में जमाअत को एक विशेष पहचान प्राप्त है। जो सच्चे इस्लाम की शिक्षा-दीक्षा और प्रचार-व-प्रसार के साथ-साथ बिना किसी भेदभाव के मानवता की सेवा में आगे से आगे बढ़ती जा रही है। चौबीस घंटे टी. वी. चैनल्स, रेडियो प्रेस एण्ड मीडिया, लीफ़लेट्स इत्यादि के द्वारा इस्लाम का वास्तविक संदेश विश्व के कोने-कोने में फैलाया जा रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल और ऊर्जा के क्षेत्रों में अभावग्रस्त लोगों की सहायता की जा रही है। इसी तरह यह सौहार्द, शान्ति और भ्रातृत्व के साथ-साथ राष्ट्रीय नियमों के पालन में अद्वितीय है। संसार में इस्लाम की सच्ची शिक्षा प्रस्तुत करने के कारण आज दूसरे धर्मजगत के लोग इससे तीव्रता से परिचित हो रहे हैं। क़ुर्आन मजीद और इस्लामी लिटरेचर के प्रचार व प्रसार में जमाअत अहमदिया अतुलनीय है। यह सिलसिला आज संसार के 200 से अधिक देशों में दृढ़ रूप से स्थापित हो चुका है।

ख़िलाफ़त की नेमत ने जमाअत को पारस्परिक एकता, दृढ़विश्वास और सत्कर्मों की दौलत देकर सीसा पिघलाई हुई दीवार के समान बना दिया है और वादा की गई नेमतों से अधिकाधिक हिस्सा दिया है। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के नेतृत्व में चारों ओर वास्तविक इस्लाम का प्रचार व प्रसार हो रहा है। लाखों लोग इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं। हर समय अल्लाह तआला की सहायता आसमान से उतरती नज़र आ रही है।

तात्पर्य यह कि ख़िलाफ़त के कारण जमाअत अहमदिया पर अल्लाह तआला के अनगिनत उपकार हो रहे हैं जबकि ख़िलाफ़त का इन्कार करने वाले हर क्षेत्र में निंदा, पराजय और उपद्रव का शिकार हो रहे हैं।

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया एक आसमानी नेमत है इसकी सांसारिक नेमतों से तुलना करना एक मूर्खता के सिवा कुछ भी नहीं। इसका एक छोर अल्लाह से और दूसरा मोमिनों से जुड़ा हुआ है। जमाअत अहमदिया का इतिहास इस बात का गवाह है कि इस रूहानी निज़ाम की शर्तों को पूरा करने वाले मोमिनों के अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भरपूर मार्गदर्शन किया है। धर्म को जहाँ मज़बूती मिली वहीं मोमिनों के भय की काली घटाएँ अमन के वातावरण से बदलती नज़र आयीं, तौहीद के परचम लहराते और बुतकदे (बुतखाने) गिरते नज़र आए और नबूवत् के आदेशों का पालन पुनः होता नज़र आया।

ख़िलाफ़त की इस नेमत पर हम अल्लाह तआला की जितनी भी प्रशंसा करें कम है। अतः हमारा पहला दायित्व यह है कि हम अल्लाह तआला के इस इनाम के महत्व को समझें और उसका हार्दिक सम्मान

करें और उसकी आज्ञापालन को अनिवार्य ठहराएँ।

हे मोमिनों! आसमानी ख़िलाफ़त का फ़ैज़ (उपकार) आज ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के रूप में तुम्हारे बीच जारी है मगर आवश्यकता इस बात की है कि उससे लाभ पाने के लिए पहले हम उस आसमानी निज़ाम को समझें और उसके स्थान और महत्व को पहचानें, उससे प्रेम और वफ़ादारी का ऐसा सम्बन्ध जोड़ें जिसका उदाहरण सांसारिक रिश्तों में से किसी रिश्ते में न पाया जाता हो। जब इससे सम्बन्धित शर्तों को पूरा करेंगे तो न केवल हम बल्कि हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी इससे लाभान्वित होती चली जाएगी।

ख़िलाफ़त का महान स्थान

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के महत्व का इस बात से भलीभाँति अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि यह आसमानी मार्गदर्शन नबी के देहान्त के बाद उसके मिशन को पूरा करने के लिए कार्यवाहक(नायब) के रूप में क़ायम हुई है। जिसके साथ हमेशा अल्लाह तआला की सहायता के वादे हैं। सफलताएँ क़दम चूमती हैं जिसे देखकर दुनिया हैरान रह जाती है कि कौन सी ताक़त है जो उसके कामों के पूरा होने में उसकी सहायक है। खिलाफ़त का पद पाने वाला व्यक्ति नूर-ए-नबूवत का प्रतिविम्ब होता है। उसके अन्दर नबी का स्वभाव और आदतें पाई जाती हैं और नबी की बरकतों से हिस्सा पाता है। यद्यपि उसे शुद्ध आचरणों वाली जमाअत के लोग चुनते हैं मगर उसके पीछे अल्लाह तआला का क़ानून-ए-क़ुदरत काम कर रहा होता है कि वह पवित्र लोगों के दिल उसकी ओर झुका देता है। इससे ज्ञात होता है कि

अल्लाह तआला ख़लीफ़ा स्वयं बनाता है। यह अल्लाह तआला का दिया हुआ वह पद है जिससे ख़लीफ़ा को कभी पदच्युत नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह नबी का नायब बन जाता है। ऐसे व्यक्ति का अल्लाह तआला स्वयं शिक्षक बनता है और उसे अध्यात्मज्ञान प्रदान करता है। जहाँ ख़ुदा मोमिनों के दिल में उसकी मुहब्बत पैदा करता है वहीं उसके दिल में भी उनके लिए मुहब्बत और नर्मी पैदा कर देता है जिसके कारण उनके कष्टों पर वह तड़पता है और उनके लिए ख़ुदा के समक्ष रो-रोकर दुआएँ करता है। उसको क़बूलियत-ए-दुआ का निशान और असाधारण तेज दिया जाता है। वह दुनिया पर बसने लोगों का आदेशक होता है जिसकी आज्ञा का पालन और अनुसरण मोमिनों पर अनिवार्य होता है और उससे मुँह मोड़कर मरना अध्यात्मज्ञान की दृष्टि से अज्ञानता की मौत है। उससे लगाव अल्लाह और उसके रसूल से लगाव है। ख़लीफ़ा अपनी ख़िलाफ़तकाल में धरती पर अल्लाह का प्रतिनिधि और सबसे प्रिय भक्त होता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मन्सब-ए-ख़िलाफ़त की वास्तविकता बयान करते हुए फ़रमाते है:-

> "ख़लीफ़ा वस्तुतः रसूल का प्रतिरूप होता है। चूँकि किसी मनुष्य के लिए भौतिक रूप से शाश्वत जीवन नहीं, इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि रसूलों के वजूद को जो पूरी दुनिया के वजूदों से अति प्रतिष्ठित और अति उत्तम हैं प्रतिरूपक दृष्टि से सदैव के लिए क़यामत तक ज़िन्दा रखे। इसलिए इसी उद्देश्य से ख़ुदा तआला ने ख़िलाफ़त को बनाया ताकि दुनिया कभी और

किसी ज़माने में रिसालत की बरकतों से वंचित न रहे।"

(शहादतुल क़ुर्आन पृ. 57, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-6 पृ 353)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है:-

"ख़ूब याद रखो कि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है। झूठा है वह आदमी जो यह कहता है कि ख़लीफ़ा लोगों का मुक़र्रर किया हुआ होता है.....क़ुर्आन करीम को ध्यान से पढ़ने से पता चलता है कि एक जगह भी ख़लीफ़ा बनाने का काम लोगों की ओर मन्सूब नहीं किया गया, बल्कि हर प्रकार के ख़लीफ़ों के बारे में अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि उन्हें हम बनाते हैं"

(कौन है जो ख़ुदा के काम को रोक सके,अनवारुल उलूम जिल्द-2 पृ. 11)

"नबूवत के बाद सबसे बड़ा पद यह है। एक आदमी ने मुझे कहा कि हम कोशिश करते हैं कि गवर्नमेन्ट आप को कोई उपाधि दे। मैंने कहा यह उपाधि तो एक साधारण बात है। मैं शहंशाह-ए-आलम के पद को भी ख़िलाफ़त के सामने तुच्छ समझता हूँ। अत: मैं आप लोगों को नसीहत करता हूँ कि अपनी बातों और कामों में ऐसा रंग अपनाएँ जिसमें तक़्वा और अदब (अर्थात् संयम और शिष्टाचार) हो। मैं कभी भी यह नहीं पसन्द कर सकता कि हमारे वे मित्र जिन पर ऐतराज़ होते हैं बरबाद हों, क्योंकि ख़िलाफ़त के पद की दृष्टि से बड़ी आयु के लोग भी मेरे लिए बच्चे के समान हैं

और कोई बाप नहीं चाहता कि उसका एक बेटा भी बरबाद हो।"

(अनवारुल उलूम जिल्द-9 पृ. 425-426)

"नि:सन्देह लोग ही ख़लीफ़ा को चुनते हैं पर उनके चयन को ख़ुदा अपना किया हुआ चुनाव फ़रमाता है और चुनाव की इस पद्धति से नबियों और ख़लीफ़ों में एक अन्तर हो जाता है। यदि ख़ुदा बराहेरास्त किसी को ख़लीफ़ा बना दे और कहे कि मैं तुझको ख़लीफ़ा बनाता हूँ तो उस ख़लीफ़ा और नबी में कोई अन्तर नहीं रह सकता। इसलिए नबी का चयन ख़ुदा ख़ुद करता है और ख़लीफ़ा का अपने भक्तों के माध्यम से। लेकिन ऐसा वह भक्तों से अपनी इच्छानुसार करवाता है और उसकी सहायता और समर्थन का वादा करता है।"

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत जिल्द-3 पृ. 593)

"ख़िलाफ़त ख़ुदा की ओर से एक इनाम है कोई नहीं जो उसमें रोक बन सके। वह ख़ुदा तआला के नूर के क़याम का एक माध्यम है। जो उसको मिटाना चाहता है वह अल्लाह तआला के नूर को मिटाना चाहता है। हाँ वह एक वादा है जो पूरा अवश्य किया जाता है लेकिन उसके ज़माना का विस्तार मोमिनों की ईमानदारी के साथ सम्बद्ध है....."

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत जिल्द-3 पृ.420-421)

"वे ख़लीफ़े जो ख़ुदा के अवतारों के जानशींन

होते हैं उनका इन्कार और उन पर हँसी करना साधारण बात नहीं, यह मोमिन को भी फ़ासिक़ बना देती है। इसलिए यह मत समझो कि तुम्हारा अपनी ज़बानों और तहरीरों को बेकाबू रखना अच्छे परिणाम पैदा करेगा। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि मैं ऐसे लोगों को अपनी जमाअत से अलग कर दूँगा। फ़ासिक़ का अर्थ यह है कि ख़ुदा से कोई नाता नहीं। इसको अच्छी तरह याद रखो कि ख़ुदा की ओर से किए गए प्रबन्ध की जो क़द्र नहीं करेगा और उस प्रबन्ध पर अकारण ऐतराज़ करेगा चाहे वह मोमिन ही क्यों न हो, यदि उसके बारे में बोलते समय अपने शब्दों पर ध्यान नहीं देगा तो याद रखो कि वह काफ़िर होकर मरेगा।"

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत जिल्द-3 पृ.8-9)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह बयान करते है:-

"...ख़लीफ़ा-ए-वक़्त सारी दुनिया का शिक्षक है और अगर यह सच है और नि:सन्देह सच है तो दुनिया के विद्वान और दार्शनिक शिष्य की हैसियत से ही उसके सामने आएँगे, शिक्षक की हैसियत से नहीं......"

(अलफ़ज़्ल 21 दिसम्बर सन् 1966 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हज़रत मुस्लेह मौऊद के सन्दर्भ से बयान करते है:-

".....यह तो हो सकता है कि व्यक्तिगत विषयों

में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से कोई ग़लती हो जाए। लेकिन उन विषयों में जिन पर जमाअत की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का आधार हो अगर उससे कोई ग़लती हो भी जाए तो अल्लाह तआला अपनी जमाअत की रक्षा करता है और किसी न किसी रंग में उसे उस ग़लती से आगाह कर देता है। सूफ़ी-सन्तों की परिभाषा में इसे इस्मत-ए-सुग़रा कहा जाता है। अर्थात् नबियों को इस्मत-ए-कुबरा प्राप्त होती है और ख़ुलफ़ा किराम को इस्मत-ए-सुग़रा। अतः अल्लाह तआला उनसे कोई ऐसी बड़ी ग़लती नहीं होने देता जो जमाअत के लिए बरबादी का कारण हो। उनके निर्णयों में आंशिक या साधारण ग़लतियाँ हो सकती हैं पर अन्ततः परिणाम यही निकलेगा कि इस्लाम को विजय प्राप्त होगी और उसके विरोधियों को पराजय। क्योंकि उनको इस्मत-ए-सुग़रा प्राप्त होने कारण ख़ुदा तआला पॉलिसी भी वही होगी जो उनकी होगी। बेशक बोलने वाले वे होंगे, ज़बानें उन्हीं की हरकत करेंगी, हाथ उन्हीं के चलेंगे, दिमाग़ उन्हीं का काम करेगा, पर इन सब के पीछे ख़ुदा तआला का अपना हाथ होगा। आंशिक विषयों में उनसे साधारण ग़लतियाँ हो सकती हैं, कभी-कभी उनके सलाहकार भी उनको ग़लत राय दे सकते हैं। लेकिन उन दरम्यानी रोकों से गुज़र कर कामयाबी उन्हीं को मिलेगी और जब सारी कड़ियाँ मिलकर एक ज़ंजीर बनेगी तो वह

ठीक होगी और ऐसी मज़बूत होगी कि कोई ताक़त उसे तोड़ न सकेगी।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-1 पृ. 341-343, बाहवाल: तफ़्सीर कबीर जिल्द-6 पृ.376-377)

इससे ज्ञात हुआ कि मोमिनों का सबसे बड़ा और आधारभूत उत्तरदायित्व निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से हार्दिक लगाव और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की बिना शर्त पूर्ण आज्ञापालन है। जब यह बात पूर्णतः सत्य है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है और जिसको ख़लीफ़ा बनाया जाता है वह दुनिया में ख़ुदा का नुमाइन्दा और सबसे प्रिय भक्त होता है तो फिर इन बातों का अनिवार्यतः उद्देश्य यह निकलता है कि ऐसे कल्याणकारी वजूद से दिलोजान से मुहब्बत की जाए और अपने आप को पूर्णतः उसकी राह में न्योछावर कर दिया जाए। यह विषय सूरः नूर की आयत इस्तिख़्लाफ़ को ध्यानपूर्वक पढ़ने से पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के विषय से पहले रसूल की आज्ञापालन का आदेश दिया और ख़िलाफ़त का वर्णन करने के बाद तुरन्त फिर रसूल की आज्ञापालन का आदेश दिया। यह कोई संयोगिक बात नहीं बल्कि इसमें यह महान रहस्य छिपा है कि ख़लीफ़ा की आज्ञापालन वस्तुतः रसूल ही की आज्ञापालन है और रसूल की आज्ञापालन का अनिवार्यतः परिणाम यह होना चाहिए कि उसके जानशींन की भी आज्ञापालन उसी वफ़ादारी और जांनिसारी से की जाए जिस तरह रसूल की आज्ञापालन का हक़ है।

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से हार्दिक लगाव के महत्व और अनिवार्यता के सम्बन्ध में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह अति

आवश्यक आदेश भी हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि:-

"فَاِنْ رَاَيْتَ يَوْمَئِذٍ خَلِيْفَةَ اللّٰهِ فِي الْاَرْضِ فَالْزِمْهُ وَاِنْ نُهِكَ جِسْمُكَ وَاُخِذَ مَالُكَ"

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल हदीस नं. 22333)

अगर तुम देखो कि अल्लाह का ख़लीफ़ा ज़मीन में मौजूद है तो उससे सम्बद्ध हो जाओ चाहे तुम्हारा शरीर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाए और तुम्हारा माल लूट लिया जाए।

इस हदीस से स्पष्ट होता है ख़िलाफ़त संसार में सबसे बड़ा और अनमोल ख़ज़ाना है और जान एवं माल से बढ़कर है। अतः जब यह नेमत अल्लाह तआला की ओर से किसी जमाअत को मिले तो उससे चिमट जाना और किसी भी दशा में उससे अलग न होना, कि वही तुम्हारे जीवन और प्रतिष्ठा की ज़मानत है।

ख़िलाफ़त की बरकतें

★धर्म का स्थायित्व

★शान्ति की स्थापना

★इबादत-ए-इलाही का वास्तविक क़याम

★तौहीद-ए-ख़ालिस का क़याम

★मानवता की सेवा

★इस्लाम का प्रचार व प्रसार

★तरक़्क़ियाँ

★एकता का क़याम

★आसमानी समर्थन व सहायताएँ

★मोमिनों की जमाअत को एक दर्दमन्द और दुआगो वजूद का नसीब होना

★रूहानी ज़िन्दगी की बक़ा (हिफ़ाज़त)

ख़िलाफ़त की बरकतों का क़ुर्आन शरीफ़ में कई जगहों पर वर्णन हुआ है। आमतौर पर सूरः नूर की आयत नं.56 में संक्षिप्त रूप से यह बयान हुआ है कि ख़िलाफ़त की महान बरकतों में से एक यह है कि इससे धर्म को स्थायित्व प्रदान होता है और मोमिनों की ख़ौफ़ की हालत अमन मे बदल जाती है। इबादत-ए-इलाही और तौहीद-ए-ख़ालिस की बुनियादें मज़बूत होती हैं और उनका सही तौर पर क़याम किया जाता है। धर्म से जुड़े हर विभाग में नई जान पड़ जाती है। तरक़्क़ियों की नई से नई राह खुल जाती है जिस पर यह आसमानी ख़िलाफ़त मोमिनों को चलाकर ज़िन्दगी के असल उद्देश्य को पाने की लगातार कोशिश करती है। रास्ते की हर रोक को हटाने

के रहस्य बतलाती है। हर तकलीफ़ और दु:ख दर्द का इलाज करती है। सबसे बढ़कर यह कि क़ौम की एकता को क़ायम रखने और क़ौम को संगठित रखने की हरदम कोशिश की जाती है। अल्लाह तआला की इबादत और उसकी सिफ़ात का परतव बनने का नमूना मोमिनों के ज़ेरे नज़र होता है जिसकी हिदायतों और इशारों से मोमिन आगे से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। यह आसमानी नेतृत्व मोमिनों को नेक कामों और उनके स्तर और उनके करने का सही समय बतलाता है जिससे संयम और सदाचरण के खेत लहलहाने लगते हैं। अल्लाह तआला का बनाया हुआ ख़लीफ़ा अल्लाह की इच्छा को समझकर मोमिनों को उसकी पुकार पर लब्बैक कहने के लिए तैयार करता है।

यह इलाही निज़ाम दुनियवी तौर पर लोगों की उन्नति और लोकहित के लिए मोमिनों को न केवल ध्यान दिलाता रहता है बल्कि उसके प्रबन्ध के लिए विधिवत् संस्थाएँ स्थापित करता है जो ख़िदमत-ए-इन्सानियत के काम करके बन्दों के अधिकारों को अदा करने के लिए ध्यान दिलाता रहता है।

यह आसमानी नेतृत्व अत्यन्त आश्चर्यजनक है जिसकी ख़ूबियों, लाभों और बरकतों को गिनना असम्भव है। ख़लीफ़ा का दिल लोगों की मुहब्बत से लबरेज़ होता है, अपने अनुयायियों से उसके प्रेम और लगाव को किसी सांसारिक रिश्ते से तुलना नहीं की जा सकती। ख़लीफ़ा ममतामयी माँ से बढ़कर होता है जो अपने अनुयायियों के दु:ख दर्द में कुढ़ता और करवटें बदलता रहता है। लोग सो रहे होते हैं तो यह उनके लिए रो-रोकर दुआएँ कर रहा होता है और उनकी तरक़्क़ी की योजनाएँ बना रहा होता है और उन योजनाओं के

अमलदरामद के लिए दुआएँ कर रहा होता है। यह उसकी दुआएँ ही होती हैं जो मोमिनों की बिगड़ी सँवारती हैं। व्यापक दया की दृष्टि से वह हर दिन पूरी दुनिया को अपने अन्तर्ध्यान में लाकर हर एक के लिए बेचैन हो जाता है। हर एक के लिए हिदायत और कामयाबी का इच्छुक होता है। अतएव अनगिनत बरकतें होती हैं जो उसके कल्याणकारी वजूद से सम्बद्ध होती हैं। उससे असंख्य लोग ख़ुशी पाते हैं। यह बरकतें नबी की बरकतों की प्रतिच्छाया होती हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ा-ए-किराम के वर्णनों के अनुसार ख़िलाफ़त की बरकतों की एक झलक प्रस्तुत की जाती है:-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:-

"हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त के बाद एक ख़तरनाक समय पैदा हो गया था। अरब के कई फ़िर्क़े इस्लाम से विमुख हो गए थे। कुछ ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया था। कई झूठे नबी खड़े हो गए थे। ऐसे समय में जो एक बड़े मज़बूत हृदय, धैर्यधारी, दृढ़विश्वासी, दृढ़निश्चयी, बहादुर और साहसी ख़लीफ़ा को चाहता था हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु खड़े किए गए। उनको ख़लीफ़ा बनते ही बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। जैसा कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का कथन है कि बार-बार उपद्रवों और अरबों की बग़ावत और झूठे पैग़म्बरों के खड़े से मेरे बाप पर वह मुसीबतें पड़ीं और दिल पर ग़म नाज़िल हुए कि अगर वे ग़म किसी पहाड़

पर पड़ते तो वह भी गिर पड़ता और टुकड़े-टुकड़े हो जाता और मिट्टी में मिल जाता। लेकिन चूँकि यह ख़ुदा का क़ानून-ए-क़ुदरत है कि जब ख़ुदा के रसूल का कोई ख़लीफ़ा उसके देहान्त के बाद बनता है तो दिलेरी, साहस, दृढ़ता, दक्षता और पराक्रमी होने की रूह उसमें फूँकी जाती है.......यही निर्णय ख़ुदा के त्वरित आदेश के रूप में न कि शरीअत के रूप में हज़रत अबूबकर के दिल पर भी नाज़िल हुआ था"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-17 पृ. 185-186, तोहफ़ा गोलड़विया)

"जब कोई रसूल या औलिया अल्लाह देहान्त पाते हैं तो दुनिया पर एक उपद्रवों का भूचाल आ जाता है और वह एक बहुत ही खतरनाक ज़माना होता है। लेकिन ख़ुदा तआला किसी ख़लीफ़ा के द्वारा उसको दूर करता है मानो इस विषय का नए सिरे से उस ख़लीफ़ा के द्वारा सुधार और स्थायित्व होता है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-4 पृ. 384)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है:-

"फ़रिश्तों से बरकतें हासिल करने की एक यह भी राह है कि अल्लाह तआला के बनाए हुए ख़लीफ़ों से निश्छल सम्बन्ध रखा जाए और उनकी आज्ञापालन की जाए........तुम्हें ख़ुदा तआला की ओर से नए दिल मिलेंगे जिनमें सुख-चैन उतरेगा और ख़ुदा के फ़रिश्ते उन दिलों को उठाये हुए होंगे..........सम्बन्ध पैदा करने

के फलस्वरूप तुम में एक बहुत बड़ा बदलाव आ जाएगा, तुम्हारी हिम्मतें बढ़ जाएँगी, तुम्हारे ईमान और विश्वास में बढ़ोत्तरी हो जाएगी, फ़रिश्ते तुम्हारी सहायता के लिए खड़े हो जाएँगे और तुम्हारे दिलों में साधना और त्याग की रूह फूँकते रहेंगे। अतएव सच्चे ख़लीफ़ों से सम्बन्ध रखना फ़रिश्तों से सम्बन्ध पैदा कर देता है और मनुष्य को ख़ुदा के ज्ञानों का भण्डार बना देता है।"

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत जिल्द-3 पृ. 392)

"अल्लाह तआला ने तुम्हें ख़िलाफ़त की नेमत दी है जिससे वे लोग (अर्थात् दूसरे मुसलमान-प्रकाशक) वंचित हैं। इस ख़िलाफ़त ने थोड़े से अहमदियों को भी एकत्र करते उन्हें ऐसी शक्ति प्रदान की है जो अलग-अलग रहने से कभी हासिल नहीं हो सकती। यूँ तो हर जमाअत में निर्धन भी होते हैं और ऐसे धनवान् भी होते हैं जो अकेले सारे बोझ को उठा लें। लेकिन समस्त लोगों को एक धागे से पिरो देना केवल मर्कज़ के द्वारा ही होता है। मर्कज़ का यह फ़ायदा होता है कि वह निर्धन को गिरने नहीं देता और धनवान् को इतना आगे बढ़ने नहीं देता कि दूसरे लोग उसके सामने तुच्छ हो जाएँ। यदि मर्कज़ नहीं होगा तो ग़रीब और ग़रीब हो जाएगा और अमीर इतना अमीर हो जाएगा कि शेष लोग समझेंगे कि यह आसमान पर है और हम ज़मीन पर, हमारा और उसका आपस में वास्ता ही क्या है।

लेकिन इस्लामी निज़ाम में आकर वे ऐसे बराबर हो जाते हैं कि कभी-कभी अमीर और ग़रीब में कोई अन्तर ही नहीं रहता।"

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत जिल्द-3 पृ.358-359)

"यह ख़िलाफ़त और तन्ज़ीम (संगठन) की ही बरकत है कि जमाअत ने बहुत सी भाषाओं में क़ुर्आन करीम के अनुवाद छपवा कर फैला दिए अन्यथा जमाअत में कोई एक आदमी भी ऐसा धनाढ्य नहीं जो इन अनुवादों में से एक अनुवाद भी छपवा सकता। इसी प्रकार कोई आदमी ऐसी पैठ नहीं रखता कि वह अकेले किसी भाषा में भी क़ुर्आन करीम का अनुवाद छपवा सकता। लेकिन सामूहिक रूप से हम अब तक अंग्रेज़ी, डच, रूसी, स्पेनिश, पुर्तगीज़, इटालियन, जर्मन, और फ्रांसीसी भाषाओं में क़ुर्आन करीम का अनुवाद करवा चुके हैं...........हमारी नीयत है कि प्रत्येक महत्त्वपूर्ण भाषा में क़ुर्आन करीम का अनुवाद प्रकाशित कर दें, ताकि किसी भाषा का जानने वाला ऐसा न रहे जो इससे फ़ायदा न उठा सके।"

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत जिल्द-3 पृ.569)

इसी के साथ ज्ञात हो कि अब तो अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया के प्रबन्ध के अन्तर्गत 74 भाषाओं में क़ुर्आन करीम का अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। इसके अतिरिक्त सन् 2015 ई. में सिन्हाली और वर्मी भाषा में भी क़ुर्आन करीम का अनुवाद

प्रकाशित हो चुका है।

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 25 सितम्बर 2015 ई. व 01
अक्टूबर सन् 2015 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रहिल अज़ीज़ फ़रमाते है:-

"क़ुदरत-ए-सानिया (अर्थात् ख़िलाफ़त) ख़ुदा की ओर से एक बड़ा इनाम है। जिसका उद्देश्य क़ौम को एक धागे में पिरोना और फूट से बचाना है। यह वह लड़ी है जिसमें जमाअत मोतियों की तरह पिरोई हुई है। यदि मोती बिखरे हों तो न तो वे सुरक्षित रहते हैं और न ही सुन्दर लगते हैं। एक लड़ी में पिरोए हुए मोती ही सुन्दर और सुरक्षित होते हैं। अगर ख़िलाफ़त न हो तो सच्चा धर्म कभी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए इसके साथ पूरी निष्ठा, प्रेम, वफ़ादारी और श्रद्धा का सम्बन्ध रखें और ख़िलाफ़त की आज्ञापालन की भावना को दायमी बनाएँ और उसके साथ प्रेम की भावना को इतना बढ़ाएँ कि उस प्रेम की तुलना में अन्य सारे रिश्ते तुच्छ लगने लगें। इमाम से सम्बद्ध होने में ही सारी बरकतें हैं और वही आपके लिए हर प्रकार के उपद्रवों और मुसीबतों से सामना के लिए ढाल है।"

(मश्अल-ए-राह जिल्द-5 खण्ड-1 पृ. 4-5 प्रकाशक मज्लिस ख़ुद्दामुल
अहमदिया भारत मई सन् 2007 ई.)

"यह क़ुदरत-ए-सानिया है या ख़िलाफ़त का

निज़ाम, अब इन्शाअल्लाह क़ायम रहना है और इसका अगर यह मतलब लिया जाए कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुलफ़ा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है वह तीस साल थी तो वह तीस वर्षीय दौर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार था। और यह दायमी दौर भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार है। क़यामत तक क्या होना है यह अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। लेकिन यह बता दूँ कि इन्शाअल्लाह यह दौर-ए-ख़िलाफ़त आपकी नस्ल दर नस्ल दर नस्ल अनगिनत पीढ़ियों तक चले जाना है पर शर्त यह है कि आप में नेकी और तक़्वा क़ायम रहे।"

(ख़ुत्बा जुमा 27 मई सन् 2005 ई.)

"अल्लाह तआला ने हमेशा ख़ुलफ़ा-ए-अहमदियत के मार्गदर्शन में जमाअत के ख़ौफ़ों को अमन में बदला और उन मुसीबतों में (दीन-ए-हक़ अर्थात् इस्लाम) को पहले से बढ़कर मज़बूती और स्थायित्व प्रदान किया और जिस तरह पहले लोगों ने यह नज़ारा देखा उसी तरह आज भी दुनिया देख रही है और आगे भी देखेगी कि ख़ुदा तआला की ओर से सहायता प्राप्त ख़िलाफ़त के निज़ाम के अधीन रहने वाली जमाअत को मिटाने का गुमान लेकर उठने वाले आग के बगोले जमाअत का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे। उनके षड़यन्त्रों की

ख़ाक ख़ुदा उन्हीं के सिरों पर डाल देगा। उसी आग में उनकी हसरतें मलियामेट कर दी जाएँगी। इन से पहले भी ये अपनी हसरतें अपने सीनों में लेकर हज़ारों मन मिट्टी के नीचे दब गए और ये भी दब जाएँगे और कभी कोई अहमदियत की तरक़्क़ी को एक पल के लिए भी न रोक सकेगा। अल्लाह तआला ने हमेशा उनकी ख़ाक उड़ाकर दुनिया को यह दिखाया है कि ख़िलाफ़त अहमदिया की सहायता करने वाला मैं वह ज़िन्दा और सर्वशक्तिमान ख़ुदा हूँ जो हमेशा अपनी जमाअतों के लिए अपनी शक्तिशाली क़ुदरतों का हाथ दिखाया करता है।"

उसी समर्थन और सहायता का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:-

"दुनिया मुझको नहीं पहचानती लेकिन वह मुझे जानता है जिसने मुझे भेजा है। यह उन लोगों की ग़लती है और सरासर दुर्भाग्य है कि मेरी तबाही चाहते हैं। मैं वह पौधा हूँ जिसको ख़ुदा ने अपने हाथ से लगाया है......हे लोगो! तुम निःसन्देह जान लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो अन्त समय तक मुझ से वफ़ा करेगा।"

(ज़मीमा तोहफ़ा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-17 पृ. 49-50)

"मुख़ालिफ़ों ने तो जमाअत को दुनिया के थोड़े से भू-भाग में फैलने से रोकने की नाकाम कोशिशें की थीं। लेकिन अल्लाह तआला ने मौऊद (कथित) बेटे के

हाथों से इस्लाम और अपने महदी की बातों को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए तहरीक जदीद के रूप में जिस महान स्कीम का प्रारम्भ किया था उसी का एक दिलनशीं फ़ैज़ आज M.T.A. के रूप में हमें प्राप्त हुआ है। अल्लाह ने यह नेमत देकर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की आवाज़ को सारी दुनिया में फैला दिया है।"

(स्वेनियर ख़िलाफ़त अहमदिया शतवार्षिकी जुबली नं. सन् 2008 ई.)

"आज ख़ुदा के फ़ज़्ल से जमाअत और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त में पारस्परिक प्रेम का एक अटूट रिश्ता क़ायम हो चुका है। अहमदी स्त्री-पुरुष, बच्चे, बूढ़े और जवान सब ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के इतने प्रिय हो गए हैं कि ख़ुदा तआला की सहायता के बिना यह सम्भव न था। सारी दुनिया में ख़िलाफ़त के प्रेमी और परवाने फैले हुए हैं और ख़िलाफ़त के रूप में मिलने वाले अल्लाह के दामन को थामे हुए सारी दुनिया में इस्लाम की अमन और प्रेम की सुन्दर शिक्षा का झण्डा ऊँचा किए हुए हैं। अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त की बरकत से जमाअत अहमदिया को एक हाथ पर इकट्ठा कर दिया है और दुनिया के सारे अहमदियों को ख़िलाफ़त की एक बाबरकत लड़ी में पिरो दिया है। ख़ुदा से सहायता प्राप्त यही वह जमाअत है जो दुनिया के आधुनिक संचार साधनों को प्रयोग करते हुए हर धर्म, जाति और वर्ण के लोगों तक दीन-ए-हक़(अर्थात् इस्लाम) का

पैग़ाम पहुँचा रही है। ख़िलाफ़त के परवानों का यह गिरोह हर पल दीन-ए-हक़ के प्रचार व प्रसार में लीन है और हर आने वाला दिन अहमदियत अर्थात् वास्तविक इस्लाम की सफलता और विजय की ख़ुशख़बरी लेकर चढ़ रहा है। इसी का नाम दीन की मज़्बूती है। अतः अल्लाह तआला ने मोमिनों से जो ख़िलाफ़त के क़याम, ख़ौफ़ के बाद अमन देने, और दीन की मज़बूती के जो वादे किए हैं जमाअत अहमदिया उनके पूरा होने का मुँह बोलता सुबूत है। इसलिए इन बरकतों से लाभ पाने के लिए और अपनी भावी पीढ़ियों को तबाही से बचाने के लिए हमेशा ख़िलाफ़त से चिमटे रहें और अपनी संतानों को भी यही पाठ पढ़ाते रहें और अपने सद्भाव, वफ़ा और दुआओं के साथ ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के मददगार बनते रहें। अल्लाह आप सबको इसका सामर्थ्य दे। आमीन"

(स्वेनियर ख़िलाफ़त अहमदिया शतवार्षिकी जुबली नं. सन् 2008 ई.)

"हमारा यह ईमान है कि ख़लीफ़ा अल्लाह तआला स्वयं बनाता है और उसके चुनाव में कोई कमी नहीं होती। जिसे अल्लाह यह जामा पहनाएगा, कोई नहीं जो इस जामा को उससे उतार सके या छीन सके। वह अपने एक कमज़ोर बन्दे को चुनता है जिसे कभी कुछ लोग तुच्छ भी समझते हैं, पर अल्लाह तआला उसको चुनकर उस पर अपनी प्रतिष्ठा और प्रताप का एक ऐसा

चमत्कार दिखाता है कि उसका वजूद सामान्य लोगों से उठकर ख़ुदा तआला की क़ुदरतों में समा जाता है। तब अल्लाह तआला उसे उठाकर अपनी गोद में बिठा लेता है और हर पल उसकी सहायता करता है और उसके दिल में अपनी जमाअत का इस तरह दर्द पैदा कर देता है कि वह उस दर्द को अपने दर्द से अधिक महसूस करने लगता है और जमाअत का हर व्यक्ति यह महसूस करने लगता है कि उसको प्यार करने वाला, उसके लिए ख़ुदा से दुआएँ करने वाला, उसका हमदर्द, एक वजूद मौजूद है।"

(ख़िलाफ़त अहमदिया शतवार्षिकी जुबली नं. सन् 2008 ई.पृ.17)

"----जमाअत के लोगों का ख़िलाफ़त से और ख़िलाफ़त का लोगों से एक ऐसा नाता है जो दुनियादारों की कल्पना से बाहर है। वे इसको समझ ही नहीं सकते।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया था कि जमाअत और ख़लीफ़ा एक ही वजूद के दो नाम हैं। जमाअत और ख़िलाफ़त का जो रिश्ता है अलहम्दुलिल्लाह कि वह इन जलसों पर और उभरकर सामने आ जाता है, मुझे इस बात की ख़ुशी है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत कनाडा भी इस निष्ठा और वफ़ादारी के सम्बन्ध में बहुत बढ़ी हुई है। अल्लाह तआला उनका यह लगाव और बढ़ाता चला जाए और यह क्षणिक जोश और जज़्बे का रिश्ता

न रहे। आप लोगों ने हमेशा मुहब्बत और वफ़ादारी दिखायी है। 27 मई को जब मैंने ख़िलाफ़त के बारे में ख़ुत्बा दिया था तो जमाअती तौर पर भी और विभिन्न जगहों से व्यक्तिगत रूप से भी सबसे पहले और सबसे अधिक मुहब्बत और वफ़ादारी के पत्र मुझे कनाडा से मिले थे। अल्लाह करे कि यह मुहब्बत और वफ़ादारी के इज़हार और दावे किसी क्षणिक जोश के कारण से न हों बल्कि हमेशा और निरन्तर रहने वाले हों और आपकी नस्लों में भी पैदा होने और क़ायम रहने वाले हों।"*

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-3पृ.388-389 मुद्रित क़ादियान सन् 2005 ई.)

नाईजीरिया की जमाअत के हवाले से बरकात-ए-ख़िलाफ़त का वर्णन करते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:-

"नाईजीरिया की जमाअत तो ख़िलाफ़त की बरकतों को बराहेरास्त देख चुकी है। आप लोगों को तो इस इनाम की अत्यधिक क़द्र करनी चाहिए। आप जानते हैं कि जो लोग यहाँ मस्जिदों समेत अलग हो गए थे आज उनकी क्या हैसियत है* कुछ भी नहीं। लेकिन जो लोग ख़िलाफ़त के इनाम से चिमटे रहे, जिन्होंने अपने बैअत के वादे को निभाने की कोशिश की, अल्लाह तआला ने उन्हें अनगिनत इनाम दिए। आज हर शहर में आप जमाअत की तरक़्क़ी के नज़ारे देखते हैं। आज आपका यहाँ हज़ारों में होना इस बात का प्रमाण है कि

ख़िलाफ़त के साथ ही बरकत है। इसलिए हमेशा अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते रहें। अल्लाह तआला आपको इसका सामर्थ्य प्रदान करे और इस इनाम से लाभान्वित होते रहें। आमीन"

(तअस्सुरात-ए-ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया शतवार्षिकी जुबली सन् 2008 पृ. 76-77)

01 मई सन् 2008 ई. को लजना इमाइल्लाह इग्लैंड ने हुज़ूर अनवर के पश्चिमी अफ्रीका के दौरे से लौटने के पश्चात् एक स्वागत समारोह का आयोजन किया जिसमें हुज़ूर अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रचना 'अलवसीयत' का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहा कि अब आपकी वापिसी का समय निकट है एक मक़बरा बनाया जाय जिसमें अति उत्तम और त्याग करने वाले लोग दफ़्न होंगे। उस समय आपने 'अलवसीयत' नाम से एक किताब लिखी। जिसमें आप फ़रमाते है:-

"इसलिए हे प्यारो! जब पुरातन से अल्लाह का विधान यही है कि वह हमेशा से दो क़ुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को नाकाम करके दिखलावे। इसलिए अब सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपने पुरातन विधान को छोड़ दे। इसलिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे सामने बयान की है दु:खी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और

उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि वह दायमी है जिसका सिलसिला क़यामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ लेकिन जब मैं जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी"

(अल-वसीयत, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20 पृ.305)

हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस शुभसंकेत को पिछले सौ वर्षों से हमेशा सच होते देखा है। ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के समय लोगों का यह विचार था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का देहान्त हो गया है अब अहमदियत थोड़े दिन की मेहमान है। फिर ख़लीफ़तुल मसीह सानी के समय में जब जमाअत के अन्दर भी फ़ित्ना उठा और ऐसे लोग जो ख़िलाफ़त के इन्कारी थे जिन्हें पैग़ामी, लाहौरी और ग़ैर मुबाययीन भी कहा जाता है। उन्होंने बहुत ज़ोर लगाया कि जमाअत का निज़ाम चलाने के लिए अब अन्जुमन हक़दार होनी चाहिए और कहा कि अब ख़िलाफ़त की कोई ज़रूरत नहीं और बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग और धर्मज्ञाता जो उस समय अहमदियत और निज़ाम-ए-जमाअत के स्तंभ समझे जाते थे अलग हो गए। उस समय ख़लीफ़तुल मसीह सानी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की आयु केवल 24 वर्ष थी और कुछ ही लोग आपके साथ रह गए थे। लेकिन हमने देखा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु का 52 वर्षीय दौर-ए-ख़िलाफ़त हर दिन तरक़्क़ी की एक नई मंज़िल तय करता रहा। आपके दौर में अफ़्रीक़ा और यूरोप में मिशन खुले और ख़िलाफ़त के 10 वर्ष

के अन्दर ही यहाँ लन्दन में आपने इस मस्जिद की नींव रख दी थी।

फिर ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हु का दौर आया जिसमें विशेष रूप से उन अफ़्रीक़ी देशों में जो किसी ज़माने में ब्रिट्रेन की एक कालोनी थे अहमदियत ख़ूब फैली और काफ़ी हद तक मज़बूत हो गई।

फिर ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ के दौर में हमने अफ़्रीक़ा में भी, यूरोप में भी और एशिया में भी हर रोज़ तरक़्क़ी का एक नया दिन देखा और M.T.A. के द्वारा दुनिया के कोने-कोने तक जमाअत की आवाज़ पहुँची।

जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा था कि

> "तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का आना ज़रूरी है क्योंकि वह दायमी है और हमेशा रहने वाली है और हमेशा वही चीज़ें रहा करती हैं जो अपनी तरक़्क़ी की मन्ज़िलें तय करती चली जाएँ। अल्लाह के फ़ज़्ल से ख़िलाफ़त से चिमटे रहने के कारण जमाअत तरक़्क़ी करती चली गई और ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ रहमहुल्लाहु तआला के देहान्त के बाद जब अल्लाह तआला ने मुझे ख़लीफ़ा बना दिया तो इस ख़ौफ़ के बावजूद जो मेरे दिल में था कि जमाअत किस तरह चलेगी? अल्लाह तआला ने ख़ुद हर चीज़ अपने हाथ में ले ली और हर तरह से तसल्ली दी और जमाअत की तरक़्क़ी का क़दम जिस रफ़्तार से बढ़ रहा था उसी तरह बढ़ता चला गया और बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम से ख़ुदा का वादा है कि:- "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मींन के किनारों तक पहुँचाऊँगा" अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह ज़मींन के किनारों तक पहुँच रही है और लोगों के गिरोह के गिरोह इसमें शामिल हो रहे हैं। अल्लाह तआला को अपने भक्तों के सम्मान का बड़ा ध्यान रहता है। वस्तुतः यह अल्लाह तआला का काम है जो कुछ लोगों के द्वारा करवाता है और नबियों (अवतारों) को जो उसके सबसे निकटस्थ होते हैं इस दुनिया में भेजकर उनके माध्यम से अपनी शिक्षा और अपना शासन क़ायम करना चाहता है। फिर नबियों के बाद उनके अनुयायियों द्वारा ख़िलाफ़त के रूप में वह निज़ाम जारी रहता है और तरक़्क़ी करता चला जाता है।"

(तअस्सुरात-ए-ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया शतवार्षिकी जुबली सन् 2008 पृ.89-91)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जमाअत के लोगों को यह ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाते है:-

"यह दौर जिसमें पाँचवीं ख़िलाफ़त के साथ हम नई सदी में दाख़िल हो रहे हैं इन्शाअल्लाह अहमदियत की तरक़्क़ी और उपलब्धियों का दौर है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अल्लाह तआला की सहायता के ऐसे द्वार खुले हैं और खुल रहे हैं कि हर आने वाला दिन जमाअत की उपलब्धियों के दिन निकट लाता जा

रहा है। मैं जब अपने आपको देखता हूँ तो शर्मिन्दा होता हूँ कि मैं तो एक कमज़ोर, नाकारा, नालायक़ और गुनहगार इन्सान हूँ, मुझे नहीं पता कि मुझे इस पद पर बैठाने में ख़ुदा तआला की क्या हिकमत थी* लेकिन यह मैं पूरे विवेक से कहता हूँ कि ख़ुदा तआला इस दौर को अपनी अनगिनत सहायताओं से तरक़्क़ी की राहों पर बढ़ाता चला जाएगा। कोई नहीं जो इस दौर में अहमदियत की तरक़्क़ी को रोक सके और न ही भविष्य में यह तरक़्क़ी कभी रुकने वाली है। ख़लीफ़ा होते रहेंगे और अहमदियत का क़दम इन्शाअल्लाह आगे से आगे बढ़ता रहेगा।"

(तअस्सुरात-ए-ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया शतवार्षिकी जुबली सन् 2008 पृ.112-113)

"जमाअत के लोग ख़लीफ़ा से बहुत मुहब्बत करते हैं और ख़लीफ़ा भी उनसे बहुत मुहब्बत करता है और वे सब ख़ुदा से मुहब्बत करते हैं। इन्शाअल्लाह यह पारस्परिक प्रेम हमेशा रहेगा।"

(तअस्सुरात-ए-ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया शतवार्षिकी जुबली सन् 2008 पृ.127)

ख़िलाफ़त की महत्त्वपूर्ण नेमत का वर्णन करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैः-

"अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से 1400 वर्ष बाद फिर एक नेमत उतारी जिसने पिछलों को पहलों से मिला दिया। अतः उसकी क़द्र करना, उसे याद

रखना और उससे लाभ उठाना हर अहमदी का कर्तव्य है। फिर उस नेमत के बाद ख़िलाफ़त की नेमत भी दी। इसलिए अब हमारा उससे निष्ठा और वफ़ादारी का सम्बन्ध रखना आवश्यक है। हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान का दावा करते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि बैअत की शर्तों पर तक़्वा के व्यवहृत हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है। अतः जो लोग यह कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानना ही काफी है ख़िलाफ़त की बैअत करना आवश्यक नहीं, वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ किए गए वादे से बाहर जाने वाले हैं........आप सौभाग्यशाली हैं कि जिनको ख़िलाफ़त की बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ लेकिन इसके लिए तक़्वा की भी आवश्यकता है। आज हम न केवल ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के 100 साल पूरे होते देख रहे हैं बल्कि अल्लाह तआला के एहसानों को देखते हुए कामयाबियों और तरक़्क़ियों की रोशनी में इसे आगे बढ़ते हुए भी देख रहे हैं।"

(तअस्सुरात-ए-ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया शतवार्षिकी जुबली सन् 2008 पृ.180-181)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमायाः-

"आज जब मैं दुनिया के किसी भी देश मे रहने

वाले अहमदी के चेहरे को देखता हूँ तो उसमें एक बात सामूहिक रूप से दिखाई देती है और वह है ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से निष्ठा और वफ़ादारी का सम्बन्ध। चाहे वह पाकिस्तान का रहने वाला अहमदी हो या हिन्दुस्तान का रहने वाला अहमदी हो या इण्डोनेशिया या द्वीप समूहों में रहने वाला अहमदी हो या बाँग्लादेश में रहने वाला अहमदी हो या आस्ट्रेलिया में रहने वाला अहमदी हो या यूरोप और अमेरिका में रहने वाला अहमदी हो या अफ़्रीक़ा के दूर दराज़ इलाक़ों में रहने वाला अहमदी हो, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को देखकर एक विशेष प्यार, एक विशेष लगाव और एक विशेष चमक उनके चेहरों और आँखों से दिखाई दे रही होती है और यह केवल इसलिए है कि उनका हज़रत मसीह मौऊद से बैअत और वफ़ादारी का सच्चा सम्बन्ध है, और यह केवल इसलिए है कि उनका आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्ण आज्ञापालन और प्रेम का सम्बन्ध है, और यह इसलिए है कि उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही हैं जो पूरी दुनिया के लिए ख़ुदा तआला की ओर से मुक्तिदाता बनाकर भेजे गए हैं और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक ले जाने की एक कड़ी है और उस एकता की निशानी है जो क़ौम को एक ख़ुदा के क़दमों में डालने के

लिए हर समय प्रयासरत है। क्या ऐसी भावनाएँ रखने वाले लोगों को कभी कोई क़ौम असफल कर सकती है* कभी नहीं। अब जमाअत अहमदिया का मुक़द्दर कामयाबियों की मंज़िलें तय करते चले जाना और सारी दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झण्डे तले जमा करना है। यह इस ज़माने के इमाम से उस ख़ुदा का वादा है जो कभी अपने वादों को झूठा नहीं होने देता।"*

(तअस्सुरात-ए-ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया शतवार्षिकी जुबली सन् 2008 पृ.195)

यह ख़िलाफ़त की बरकतों का एक संक्षिप्त विवरण था। हमारी बुद्धि उसके सारे उपकारों को गिनने से विवश है और हमारी क़लम उनका विवरण लिखने में असमर्थ। लेकिन इन सब के अलावा यह एक स्पष्ट सच्चाई है कि नबूवत् के बाद हर प्रकार के उपकार ख़िलाफ़त से जुड़े हैं और हर भलाई की प्राप्ति इससे सम्बद्ध है। मोमिन इस बात को स्वीकार करते हैं कि इसी के द्वारा लाभ की प्राप्ति सम्भव है। स्पष्ट रहे कि ख़िलाफ़त की बरकतें पाने के लिए यह अति आवश्यक है कि ख़िलाफ़त की बरकतों को याद रखा जाए। इस सम्बन्ध में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैः-

"मैं नसीहत करना चाहता हूँ कि वे ख़िलाफ़त की बरकतों को याद रखें। किसी चीज़ को याद रखने के लिए पुरानी क़ौमों का यह नियम है कि वे वर्ष में इसके लिए विशेष रूप से एक दिन मनाती हैं, उदाहरणतः शियों को देख लो वे वर्ष में एक बार ताज़िया निकालते

हैं ताकि क़ौम को हुसैन रज़ि. की शहादत का दिन याद रहे। उसी तरह मैं भी ख़ुद्दाम को नसीहत करता हूँ कि वे वर्ष में एक दिन 'ख़िलाफ़त डे' के रूप में मनाया करें। उसमें वे ख़िलाफ़त के क़याम पर ख़ुदा तआला का शुक्रिया अदा करें और अपने पुराने इतिहास को दोहराया करें। इसी तरह वे रोअया और कुशूफ़ बयान किए जाया करें जो समय से पहले ख़ुदा तआला ने मुझे दिखाये और जिनको पूरा करके ख़ुदा तआला ने साबित कर दिया कि उसकी बरकतें अब भी ख़िलाफ़त के साथ सम्बद्ध हैं।"

(अलफ़ज़्ल 01 मई सन् 1957 ई.)

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से प्रेम और उसकी आज्ञापालन और हमारी ज़िम्मेदारियाँ

ख़िलाफ़त के साथ जुड़ाव और उससे वफ़ादारी और प्रेम यही है कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हर आदेश का तुरन्त पालन किया जाय। उससे अलग होने वालों और आज्ञापालन से बाहर निकलने वालों को क़ुर्आन मजीद ने 'फ़ासिक़' कहा है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि:-

जो व्यक्ति इस दशा में मरा कि उसने वक़्त के इमाम की बैअत नहीं की तो वह जाहिलियत की मौत मरा।

(मुस्लिम किताबुल अमारत)

ख़लीफ़ा की बैअत करने के बाद यदि कोई उसके आदेशों और

नसीहतों का पालन नहीं करता तो उसकी मिसाल भी ग़ैर मुबाययीन या मुन्करीन जैसी ही है। बल्कि वह उनसे बढ़कर दुर्भाग्यशाली है और उनकी अपेक्षा अधिक दण्डनीय है।

ख़िलाफ़त से ही निज़ाम-ए-जमाअत मज़बूत है क्योंकि निज़ाम-ए-जमाअत ख़लीफ़ा की ओर से बनाया हुआ एक SET UP है जो सुपुर्द किए गए कामों सरलतापूर्वक करने के लिए होता है। इस निज़ाम का पूर्णता पालन भी आवश्यक है। इससे सम्बद्ध रहना अनिवार्य है। इससे हटकर आज्ञापालन और वफ़ादारी का दम भरना एक धोखा है जो अल्लाह तआला को पसन्द नहीं, बल्कि यह दुराचार की एक कड़ी है।

आज्ञापालन का पहला स्टेज तो यह है कि मोमिन पहले ख़लीफ़ा की आवाज़ को ध्यानपूर्वक सुने और जो उसके मुँह से निकले उसके पालन की कोशिश में हमेशा लगा रहे। क़ुर्आन मजीद में मोमिनों की जमाअत की पहचान سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا (समेना व अताना) के शब्दों में बयान हुई है। वे नेकी की बातों को हमेशा ध्यान से सुनते, समझते और याद रखते हैं और फिर उन पर दिल से अमल भी करते हैं। जो आदमी सुनेगा नहीं वह अमल क्या करेगा* हदीस शरीफ़ में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-

اُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللّٰهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ

(तिर्मिज़ी किताबुल ईमान किताबुल अख़ज़ बिलसुन्नत)

मैं तुम्हें अल्लाह का तक़्वा अपनाने और सुनने एवं पालन करने का आदेश देता हूँ।

इससे पता लगता है कि तक़्वा अपनाने के दो बड़े स्टेज

हैं (1) हिदायतों का ध्यानपूर्वक सुनना (2) और फिर उनका पालन करना।

इस सम्बन्ध में एक दूसरी हदीस यह है कि:-

اِسۡمَعُوۡا وَاَطِیۡعُوۡا (इस्मऊ व अतीऊ) सुनो और पालन करो।

हज़रत अनस् इब्नि मालिक रज़ि. से वर्णित है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-

> सुनो और पालन करो। चाहे तुम पर ऐसा हब्शी ग़ुलाम हाकिम बना दिया जाय जिसका सिर मुनक़्क़: के समान छोटा हो।

(सहीह बुख़ारी किताबुल अहकाम बाब अस्समअ व ताअतुल इमाम मा लम् तकुन मासियत)

हज़रत इब्नि उमर रज़ि. बयान करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि

> जिसने अल्लाह तआला के आदेशों के पालन से अपना मुँह मोड़ा वह अल्लाह तआला से (क़यामत के दिन) इस हालत में मिलेगा कि न उसके पास कोई तर्क होगा और न कोई बहाना और जो व्यक्ति इस हाल में मरा कि उसने वक़्त के इमाम की बैअत नहीं की थी तो वह जाहिलियत और गुमराही की मौत मरा।

(सहीह मुस्लिम किताब बाब वजूब मुलाज़िमत जमाअत मुस्लिमीन)

फिर एक हदीस में लिखा है जो हज़रत अबूहुरैर: से वर्णित है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

> तंगदस्ती और ख़ुशहाली, ख़ुशी और ग़म,

हक़तलफ़ी और तर्जीही सुलूक, इत्यादि हर हाल में तेरे लिए वक़्त के हाकिम के आदेश को सुनना और उसका पालन करना अनिवार्य है।

(सहीह मुस्लिम किताबुल अमारत)

फिर हज़रत उबादः इब्नि वलीद अपने दादा की रिवायत अपने पिता से सुनकर बयान करते हैं कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनने और बात मानने की बुनियाद पर बैअत की थी। चाहे भले ही तंगदस्ती और ख़ुशहाली और सुख-दुःख इत्यादि में हमारे अधिकारों का ख़याल न रखा जाए। हम उस व्यक्ति की अगुवाई में जो उसके योग्य है झगड़ा न करेंगे और हम जहाँ भी होंगे सच बोलेंगे और अल्लाह की राह में किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे।

(सहीह मुस्लिम किताबुल अमारत बाब वजूब ताअतुल ओमरा फ़ी ग़ैर मासियत व तहरीमिहा फिल मासियत)

फिर एक हदीस हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि. से वर्णित है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-

सुनना और पालन करना हर मुसलमान का कर्तव्य है, चाहे वह आदेश उसे पसन्द हो या नापसन्द। हाँ अगर उसे गुनाह का आदेश दिया जाय तो फिर उस पर आज्ञापालन अनिवार्य नहीं।

(सहीह बुख़ारी किताबुल अहकाम बाब समअ व ताअतुल इमाम)

हज़रत अबूहुरैरः रज़ि. से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

जिसने मेरी आज्ञापालन की उसने अल्लाह तआला

की आज्ञापालन की और जिसने मेरी नाफ़र्मानी की उसने अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी की और जिसने मेरे अमीर की आज्ञापालन की उसने मेरी आज्ञापालन की और जिसने मेरे अमीर की नाफ़र्मानी की उसने मेरी नाफ़र्मानी की।

(सहीह मुस्लिम किताबुल अमारत बाब वजूब ताअतुल ओमरा फ़ी ग़ैर मासियत व तहरीमिहा फिल मासियत)

मानो एक सच्चे मोमिन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह नबी और उसके ख़ुलफ़ा की हिदायत को सुने और फिर उस पर पालन के लिए कमर कस ले।

ख़िलाफ़त और निज़ाम-ए-जमाअत की आज्ञापालन और हमारी ज़िम्मेदारियों से सम्बन्धित ख़ुलफ़ा किराम के कुछ आदेश पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किए जाते हैं जिनसे इस विषय पर काफी रोशनी पड़ती है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है:-

"अब चूँकि ख़ुदा तआला ने फिर अपनी कृपा से मुसलमानों को पुनः ज़िन्दा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम के बाद जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त क़ायम की है। इसलिए मैं अपनी जमाअत से कहता हूँ कि तुम्हारा काम यह है कि तुम हमेशा अपने आप को ख़िलाफ़त से जोड़े रखो और ख़िलाफ़त के क़याम के लिए क़ुर्बानियाँ करते चले जाओ। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम में हमेशा

ख़िलाफ़त रहेगी। ख़िलाफ़त तुम्हारे हाथ में ख़ुदा तआला ने दी ही इसलिए है ताकि वह कह सके कि मैंने इसे तुम्हारे हाथ में दिया था। अगर तुम चाहते तो यह तुम में क़ायम रहती। अल्लाह तआला चाहता तो इल्हामी तौर पर भी इसे क़ायम कर सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया। बल्कि उसने यह कहा कि अगर तुम लोग ख़िलाफ़त को क़ायम रखना चाहोगे तो मैं भी उसे क़ायम रखूँगा। अर्थात उसने तुम्हारे मुँह से कहलवाना है कि तुम ख़िलाफ़त चाहते हो या नहीं चाहते। अब अगर तुम अपना मुँह बन्द कर लो या ख़िलाफ़त के चुनाव में पात्रता की ओर ध्यान न दो तो तुम इस नेमत को खो बैठोगे। अतः मुसलमानों की तबाही के कारणों पर ग़ौर करो और अपने आपको मौत का शिकार होने से बचाओ। तुम्हारी अक़्लें तेज़ होनी चाहिएँ और तुम्हारे हौसले बुलन्द होने चाहिए। तुम वह चट्टान न बनो जो नदी की धार को मोड़ देती है, बल्कि तुम्हारा काम यह है कि तुम वह चैनल बन जाओ जो पानी को आसानी से गुज़ारती है। तुम एक टनल हो जिसका काम यह है कि ख़ुदा की उस नेमत को जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा मिली है उसे आगे बढ़ाते चले जाओ। यदि तुम ऐसा करने में कामियाब हो जाओगे तो तुम एक ऐसी क़ौम बन जाओगे जिस पर कभी पतन का ज़माना नहीं आएगा

और यदि तुम ख़ुदा की इस नेमत की राह में रोक बन गए और उसके रास्ते में पत्थर बनकर खड़े हो गए तो वह समय तुम्हारी क़ौम की तबाही का समय होगा। फिर तुम ज़्यादा दिनों तक नहीं जिओगे बल्कि उसी तरह मरोगे जिस तरह पहली क़ौमें मरीं। "

(तफ़्सीर सूर: नमल, तफ़्सीर कबीर जिल्द-7 पृ. 429-430)

"तुम्हारा कर्तव्य है कि जब भी तुम्हारे कानों में ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ पड़े तो तुम तुरन्त उसको स्वीकार करो और उसके पालन के लिए दौड़ पड़ो कि इसी में तुम्हारी उन्नति का रहस्य छिपा है, बल्कि अगर इन्सान उस समय नमाज़ पढ़ रहा हो तब भी उसका कर्तव्य है कि वह नमाज़ तोड़कर ख़ुदा के रसूल के आदेश का उत्तर दे। इसके बाद यही आदेश ख़लीफ़तुल मसीह के सम्बन्ध में चरितार्थ होता है और उसकी पुकार पर एकत्र होना भी अनिवार्य हो जाता है।"

(तक़रीर मन्सब-ए-ख़िलाफ़त उद्धृत निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की बरकात और हमारी ज़िम्मेदारियाँ पृ. 42)

"जो जमाअतें संगठित होती हैं उन पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ लागू होती हैं जिनके बिना उनके काम कभी सही तौर पर नहीं चल सकते......उन शर्तों और ज़िम्मेदारियों में से एक महत्त्वपूर्ण शर्त और ज़िम्मेदारी यह है कि जब वे एक इमाम के हाथ पर बैअत कर चुके तो फिर उन्हें इमाम के मुँह की ओर तकते रहना

चाहिए कि वह क्या कहता है और उसके क़दम उठाने के बाद अपना क़दम उठाना चाहिए.......इमाम का स्थान तो यह है कि वह आदेश दे और अनुगामी का स्थान यह है कि वह पाबन्दी करे।"

(अलफ़ज़्ल 05 जून 1937 ई.)

"इस बात को ख़ूब अच्छी तरह याद रखो कि ख़िलाफ़त अल्लाह की एक रस्सी है और यह एक ऐसी रस्सी है कि इसी को पकड़कर तुम तरक़्क़ी कर सकते हो। इसको जो छोड़ेगा वह तबाह हो जाएगा।"

(दर्सुल क़ुर्आन वर्णित 01 मार्च सन् 1912ई., दर्सुल क़ुर्आन पृ. 67-84 मुद्रित क़ादियान नवम्बर 1912ई.)

"हमारा यह अक़ीदा है कि ख़िलाफ़त इस्लाम का एक महत्त्वपूर्ण अंग है और जो इससे बग़ावत करता है वह इस्लाम से बग़ावत करता है। अगर हमारा यह अक़ीदा सही है तो जो लोग इस अक़ीदे को मानते हैं उनके लिए اَلْاِمَامُ جُنَّةٌ يُقَاتَلُ مِنْ وَّرَائِهٖ

(अल् इमामु जुन्नतुन युक़ातलु मिन वराइही) का आदेश बहुत महत्त्व रखता है। क्योंकि ख़िलाफ़त का उद्देश्य तो यह है कि मुसलमानों में व्यवहारिक और वैचारिक एकता पैदा की जाय और यह एकता ख़िलाफ़त के द्वारा तभी पैदा हो सकती है जब ख़िलाफ़त के आदेशों पर पूर्णतः पालन किया जाय। जिस तरह नमाज़ में इमाम के रुकू के साथ रुकू और क़याम के

साथ क़याम और सिज्दः के साथ सिज्दः किया जाता है उसी तरह ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के आदेशों के अनुसार सारी जमाअत चले और उसके आदेश की सीमा लाँघने की कोशिश न करे। नमाज़ का इमाम जो केवल थोड़े से मुक़्तदियों का इमाम होता है, जब उसके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया कि जो उसके रुकू और सिज्दः में जाने से पहले रुकू और सिज्दः करता है या उससे पहले सिर उठाता है तो वह गुनहगार है। तो जो आदमी सारी क़ौम का इमाम हो और उसके हाथ पर सब ने बैअत की हो तो उसकी आज्ञापालन कितनी अनिवार्य समझी जाएगी.......इसी तरह तुम सब इमाम के इशारे पर चलो और उसकी हिदायत से तनिक भी इधर-उधर न हो। जब वह आदेश दे कि बढ़ो तो आगे बढ़ो और जब वह आदेश दे कि ठहर जाओ तो ठहर जाओ और वह जिधर बढ़ने का आदेश दे उधर बढ़ो और जिधर से हटने का आदेश दे उधर से हट जाओ।"

(अन्वारुल उलूम जिल्द-14 पृ. 515-516, क़याम-ए-अमन और क़ानून की पाबन्दी के बारे में जमाअत अहमदिया का कर्तव्य)

फिर फ़रमाते है:-

"जिस तरह वही शाख़ फल ला सकती है जो वृक्ष के साथ हो और जो वृक्ष से अलग हो उस पर कभी फल नहीं लग सकता। उसी तरह वही आदमी

सिलसिले का अच्छा काम कर सकता है जो अपने आपको इमाम से सम्बद्ध रखता है। अगर कोई आदमी इमाम के साथ अपने आप को जोड़े न रखे तो चाहे वह दुनिया की सारी विद्याएँ जानता हो पर वह इतना भी काम नहीं कर सकेगा जितना कि बकरी का बच्चा। अगर आप तरक़्क़ी करना चाहते हो और दुनिया पर विजय पाना चाहते हो तो आपको मेरी यह नसीहत और पैग़ाम है कि आप ख़िलाफ़त से जुड़ जाएँ और अल्लाह की इस रस्सी (अर्थात् ख़िलाफ़त) को मज़बूती से थामे रखें। हमारी सारी तरक़्क़ी का दारोमदार ख़िलाफ़त से जुड़ने में ही छिपा है।"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 23-30 मई सन् 2003 ई. पृ.1)

"जो जमाअतें संगठित होती हैं उन पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ लागू होती हैं जिनके बिना उनके काम कभी सही तौर पर नहीं चल सकते......उन शर्तों और ज़िम्मेदारियों में से एक महत्त्वपूर्ण शर्त और ज़िम्मेदारी यह है कि जब वे एक इमाम के हाथ पर बैअत कर चुके तो फिर उन्हें इमाम के मुँह की ओर तकते रहना चाहिए कि वह क्या कहता है और उसके क़दम उठाने के बाद अपना क़दम उठाना चाहिए और लोगों को कभी ऐसे कामों में भाग नहीं लेना चाहिए जिनके दुष्परिणाम सारी जमाअत पर आकर पड़ते हों, फिर तो इमाम की आवश्यकता ही नहीं रहती..........इमाम का स्थान तो

यह है कि वह आदेश दे और अनुगामी का स्थान यह है कि वह पाबन्दी करे।"

(अलफ़ज़्ल 05 जून 1937 ई.पृ. 1-2)

"ख़लीफ़ा गुरू है और जमाअत का हर व्यक्ति शिष्य। जो शब्द भी ख़लीफ़ा के मुँह से निकले उस पर बिना व्यवहृत हुए न छोड़ना। "

(अलफ़ज़्ल 02 मार्च सन् 1946 ई.)

"हे मित्रो! सचेत रहो और अपने स्थान को समझो और उस आज्ञापालन का आदर्श प्रस्तुत करो जिसका उदाहरण संसार के किसी अन्य पटल पर न मिलता हो और कोशिश करो कि सौ में से सौ पूर्ण आज्ञाकारिता का उदाहरण प्रस्तुत करें और इस ढाल से बाहर किसी का कोई अंग न रहे जिसे ख़ुदा तआला ने तुम्हारी रक्षा के लिए चुना है और

اَلْاِمَامُ جُنَّةٌ يُقَاتَلُ مِنْ وَّرَاۤئِهٖ

(अल् इमामु जुन्नतुन युक़ातलु मिन वराइही) पर इस तरह चलो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह ख़ुश हो जाए।"

(अन्वारुल उलूम जिल्द-4 पृ.525)

"ख़िलाफ़त का तो अर्थ ही यही है कि जिस समय ख़लीफ़ा के मुँह से कोई बात निकले तो अपने सारे विचारों, प्रस्तावों और योजनाओं को छोड़ दिया जाय और समझ लिया जाय कि अब वही योजना वही प्रस्ताव

और वही उपाय ही लाभदायक है जिसका ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की ओर से आदेश मिला है। जब तक यह भाव जमाअत में पैदा न हो तब तक सारे ख़ुत्बे, सारी योजनाएँ और सारे उपाय व्यर्थ हैं।"

(ख़ुत्बा जुमा 24 जनवरी सन् 1936ई.)

"इमाम और ख़लीफ़ा की आवश्यकता यही है कि मोमिन अपना हर क़दम उसके पीछे उठाता है, अपनी चाहत और इच्छाओं को उसकी चाहत और इच्छाओं के अधीन करता है, अपने उपायों को उसके उपायों के अधीन करता है, अपने इरादों को उसके इरादों के अधीन करता है, अपनी इच्छाओं को उसकी इच्छाओं के अधीन करता है और अपने सामानों को उसके अधीन कर देता है। यदि इस स्तर पर मोमिन पहुँच जाएँ तो उनके लिए विजय और सफलता निश्चित है।"

(अलफ़ज़ल 04 सितम्बर सन् 1937ई.)

"याद रखो------ ईमान इस बात का नाम है कि ख़ुदा तआला के खड़े किए हुए प्रतिनिधि के मुँह से जो भी आदेश निकले उसका अनुसरण और पालन किया जाय।"

(अलफ़ज़ल 15 दिसम्बर सन् 1994 ई.)

"-----हज़ार बार कोई कहे कि मैं मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाता हूँ, हज़ार बार कोई कहे कि मैं अहमदियत को सच्चा समझता हूँ, ख़ुदा

के समक्ष उसके उन दावों की तब तक कोई क़ीमत न होगी जब तक वह अपने आप को उस व्यक्ति के अधीन नहीं करता जिसके द्वारा ख़ुदा इस ज़माने में इस्लाम को तरक़्क़ी देना चाहता है। जब तक जमाअत का हर व्यक्ति दीवानों की तरह उसकी आज्ञापालन नहीं करता और उसके अनुसरण में अपने जीवन का हर पल व्यतीत नहीं करता उस समय तक वह किसी प्रकार की प्रतिष्ठा और बड़ाई का पात्र नहीं हो सकता।"

(अलफ़ज़ल 15 नवम्बर सन् 1946 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद[रज़ि॰] फ़रमाते है:-

"नि:सन्देह मैं नबी नहीं हूँ लेकिन मैं नबूवत के क़दमों पर और उसके स्थान पर खड़ा हूँ। हर वह व्यक्ति जो मेरा आज्ञापालन नहीं करता वह नि:सन्देह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण से बाहर होता है-------मेरी अनुसरण और आज्ञापालन में ख़ुदा तआला की अनुसरण और आज्ञापालन है।"

(अलफ़ज़ल 04 सितम्बर सन् 1937 ई.)

"ख़लीफ़ा जिस बात का आदेश देता है उसकी नाफ़र्मानी करने वाला ऐसा ही मुजरिम है जैसा कि ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाफ़र्मानी करने वाला। यद्यपि इसकी कोई (सांसारिक) सज़ा शरीअत ने निर्धारित नहीं की मगर मोमिनों के निकट नाफ़र्मानी ख़ुद अपने आप में एक सज़ा है और

यह एहसास कि ख़लीफ़ा का आदेश नहीं माना गया ख़ुद ही एक सज़ा है और यही असल सज़ा है। दूसरी सज़ाएँ तो मस्लहत के तौर पर दी जाती हैं। अन्यथा अल्लाह तआला के क़ायम किए हुए सिलसिला और ख़लीफ़ा की नाफ़र्मानी से बढ़कर और क्या सज़ा हो सकती है। अल्लाह तआला और उसके रसूल की नाराज़गी ख़ुद ही बहुत बड़ी सज़ा है। दोज़ख़ (नर्क)की सज़ा का अभिप्राय ही यही है कि अल्लाह तआला नाराज़ है।"

(ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबूवत जिल्द-3 पृ.558)

"ख़ुदा तआला ने फिर अपने फ़ज़्ल से मुसलमानों के पुनः उत्थान के लिए हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम के द्वारा जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नबूवत क़ायम की है इसलिए मैं अपनी जमाअत से कहता हूँ कि तुम्हारा काम यह है कि तुम हमेशा अपने आप को ख़िलाफ़त से जोड़े रखो और ख़िलाफ़त के क़याम के लिए क़ुर्बानियाँ करते चले जाओ। अगर तुम ऐसा करोगे तो ख़िलाफ़त तुम में हमेशा रहेगी।"

(तफ़्सीर कबीर जिल्द-7 पृ. 430)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते है:-

"----ख़लीफ़े ख़ुदा मुक़र्रर करता है और ख़ुद उनके ख़ौफ़ों को दूर करता है। जो व्यक्ति दूसरों की

इच्छानुसार हर समय एक नौकर की तरह काम करता है उसको डर क्या और उसमें एक ख़ुदा के सामने झुकने वाली कौन सी बात है? हालाँकि ख़लीफ़ों के लिए तो यह ज़रूरी है कि ख़ुदा उन्हें ख़लीफ़ा बनाता है और उनके ख़ौफ़ को अमन में बदल देता है और वे ख़ुदा ही की इबादत करते हैं और किसी को उसका साझीदार नहीं ठहराते। फ़रमाया कि अगर नबी को कोई न माने तो उसकी नबूवत में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, वह नबी नबी ही रहता है। यही हाल ख़लीफ़ा का है, अगर उसको सब छोड़ दें फिर भी वह ख़लीफ़ा ख़लीफ़ा ही रहता है। क्योंकि जो निर्णय जड़ के बारे में है वही शाख़ के बारे में भी। ख़ूब याद रखो कि जो सिर्फ़ शासन करने के लिए ख़लीफ़ा बना है तो वह झूठा है और यदि समाज सुधार के लिए ख़ुदा की ओर से काम करता है तो ख़ुदा का चहेता है चाहे सारी दुनिया उसकी शत्रु हो।"

(मन्सब-ए-ख़िलाफ़त, अन्वारुल उलूम जिल्द-2 पृ. 53-54)

"------आप लोगों का कर्तव्य है कि अल्लाह तआला के इस महान इनाम की क़द्र करें और उसका शुक्रिया अदा करें। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त और निज़ाम-ए-जमाअत के साथ प्रेम और आज्ञापालन का मज़बूत रिश्ता जोड़ें और यही आपकी विशिष्ट पहचान होनी चाहिए, अल्लाह करे कि आप नेकी, तक़्वा, निष्ठा,

और आज्ञापालन का महान आदर्श बन जाएँ -----मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि अगर आप तक़्वा पर क़ायम रहे और आपका ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से प्रेम और वफ़ादारी का सम्बन्ध रहा और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के आदेशों का पालन और सम्मान आपके दिलों में जोश मारता रहा तो आप अल्लाह तआला के उन दायमी इनामों के हमेशा पात्र बने रहेंगे जिनका वादा अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में अपने मोमिन बन्दों से किया है। इसकी बरकत से आपकी धार्मिक एवं सांसारिक दोनों हालतें सँवर जाएँगी और आपको स्थायित्व प्राप्त होगा और इसकी बरकत से ख़ुदा हमेशा आपके ख़ौफ़ों को अमन में बदलता रहेगा। लेकिन इसके लिए शुद्ध रूप से एक ख़ुदा की इबादत और नैतिक कर्म शर्त हैं। उन्हें दृष्टिगत रखें और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के आदेशों का पालन करने के लिए हमेशा तत्पर रहें। यदि ऐसा करेंगे तो कामियाबियाँ आपके क़दम चूमेंगी और लोक परलोक में आपको उन्नति प्रदान की जाएगी। इन्शाअल्लाह। अल्लाह आपको मेरी इन नसीहतों पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान करे और आप वास्तविक रंग में इस पवित्र बस्ती (क़ादियान) का हक़ अदा करने वाले बन जाएँ। आमीन"

(ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया शतवार्षिकी जुबली सन् 2008 पृ.29)

"याद रखें -------अगर यह दावा किया है कि

आपको ख़ुदा तआला के लिए ख़िलाफ़त से मुहब्बत है तो फिर निज़ाम-ए-जमाअत जो कि निज़ाम-ए-खिलाफ़त का हिस्सा है उसका भी पूर्णतः पालन करें।"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 15 जुलाई सन् 2005 ई.)

"अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन इसी में है कि निज़ाम-ए-जमाअत के ओहदेदारों की आज्ञाओं का पालन करो, उनके आदेशों और निर्णयों को स्वीकार करो। यदि ये निर्णय ग़लत हैं तो अल्लाह तुम्हें सब्र का प्रतिफल देगा। क्योंकि तुम प्रतिफल दिवस पर ईमान रखते हो इसलिए मामला अल्लाह पर छोड़ो। तुम्हें अधिकार नहीं कि अपनी बात पर ज़िद करो। तुम्हारा काम केवल आज्ञापालन है, आज्ञापालन है, आज्ञापालन है।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-1 पृ. 258-266)

"अब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक की अधीनता और ख़िलाफ़त के आज्ञापालन में ही अल्लाह तआला की अनुकम्पाओं की प्राप्ति के रास्ते हैं इसके अतिरिक्त दूसरी कोई राह नहीं। अल्लाह तआला सब को इसे समझने की सामर्थ्य प्रदान करे -----निष्ठा, निबाह और आज्ञापालन के इस सम्बन्ध को बढ़ाते चले जाएँ ताकि हम जल्द से जल्द सारी दुनिया में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झण्डे को गाड़कर दुनिया में ख़ुदा की हुकूमत क़ायम कर दें।"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 12-18 जून सन् 2015 ई. पृ. 10)

"अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जोड़ने के पश्चात् ख़िलाफ़त की पूर्णत: आज्ञापालन की सर्वाधिक आवश्यकता है। यही वह चीज़ है जो जमाअत की मज़बूती और रूहानियत में तरक़्क़ी का कारण बनेगी। ख़िलाफ़त की पहचान और उसका सही ज्ञान जमाअत में इस तरह पैदा हो जाना चाहिए कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हर फ़ैसले को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करने वाले हों और किसी बात को सुनकर दिल में किसी प्रकार की मलिनता और बाधा उत्पन्न न हो। प्रत्येक दशा में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त और निज़ाम-ए-जमाअत की आज्ञापालन का एक महत्त्व है और हर एक को इस महत्त्व के बारे में ज्ञात होना चाहिए।"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 12-18 जून सन् 2015 ई. पृ. 10)

"जमाअत के हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह पूर्ण रूप से आज्ञापालन करे। जब हर एक पूर्ण आज्ञापालन करेगा तो हमारे क़दम रूहानी बुलन्दियों की ओर बढ़ेंगे, इन्शाअल्लाह।"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 12-18 जून सन् 2015 ई. पृ. 11)

"हर एक के लिए अपनी आज्ञापालन को मापने का यह पैमाना है कि क्या दिल में नूर पैदा हो रहा है? क्या आज्ञापालन से हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त हो रही है? अगर हर एक स्वयं इस पर ग़ौर करे तो वह स्वयं ही अपनी आज्ञापालन के स्तर को परख लेगा कि वह

कितना है और कितना अल्लाह तआला के आदेशों पर व्यवहृत है और कितनी वह रसूल की आज्ञाओं का पालन कर रहा है। अगर अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञापालन के बाद कोई नूर प्राप्त नहीं होता तो आपने फ़रमाया, इसका कोई फ़ायदा नहीं। समसामयिक सरकार की आज्ञापालन से अमन और सुकून तो पैदा होगा पर रूहानी नूर और आनन्द रूहानी निज़ाम के पालन में ही है।"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 12-18 जून सन् 2015 ई. पृ. 11)

"------याद रखें कि ओमरा भी, सदरान भी और ओहदेदारान भी और ज़ैली तंज़ीमों (अधीनस्थ संगठनों) के ओहदेदारान भी ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के बनाए हुए प्रबन्धतन्त्र का एक हिस्सा हैं और इस दृष्टि से वे ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के प्रतिनिधि हैं। इसलिए उनकी सोच अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उसी तरह होनी चाहिए जिस तरह ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की। अतः उन्हीं हिदायतों पर अमल होना चाहिए जो मर्कज़ी तौर पर दी जाती हैं। यदि इस तरह नहीं करते तो फिर अपने ओहदे का हक़ अदा नहीं कर रहे और जो उसके इन्साफ़ के तक़ाज़े हैं वे भी पूरे नहीं कर रहे।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-2 पृ. 951)

हुज़ूर अनवर शूरा के नुमाइन्दों और अन्य कर्मचारियों को ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के आदेशों के पालन की ओर ध्यान दिलाते हुए

फ़रमाते है:-

"------शूरा के फ़ैसलों पर अमलदरामद करवाना शूरा के नुमाइन्दों और ओहदेदारों का काम है। क्योंकि यह फ़ैसले ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से मन्ज़ूर शुदा होते हैं। यदि उन पर अमलदरामद करवाने की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया जा रहा तो व्यर्थ के तौर पर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के फ़ैसलों को हल्का समझ रहे होते हैं। जिसका अर्थ यह है कि वे आज्ञापालन नहीं कर रहे होते। हालाँकि जिनके सुपुर्द ज़िम्मेदारियाँ की गई हैं उन्हें तो आज्ञापालन के वे उच्च आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए जो दूसरों के लिए अनुकरणीय हों। इसलिए यह जो क़ौम की सेवा के अवसर मिले हैं उन्हें यह न समझें कि यह बड़ी ख़ुशी और प्रतिष्ठा की बात है कि हमें क़ौम की सेवा का अवसर मिल गया। जब इसके साथ तक़्वा के उच्च मापदण्ड स्थापित होंगे तब यह ख़ुशी और प्रतिष्ठा की बात कहलाएगी और तभी ये प्रतिष्ठा और ख़ुशी के स्थान बनेंगे -----अल्लाह सब को तक़्वा की राहों पर चलाते हुए अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने की तौफ़ीक़ दे और वे तमाम् लोग जिनको किसी भी रंग में जमाअत की सेवा करने का अवसर मिल रहा है ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के मददगार बनकर रहें।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-4 पृ. 165-166 मुद्रित क़ादियान सन् 2005 ई.)

निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की पूर्णतः आज्ञापालन हेतु यह आवश्यक

है कि जमाअत के लोग शूरा के निज़ाम के लाभ को समझें और शूरा की मज्लिसों में जमाअत की तरक़्क़ियों के जो प्रस्ताव अपने नुमाइन्दों के द्वारा ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के पास भिजवाएँ वे पूरी तरह जमाअत और सिलसिले के लिए उचित और लाभदायक हों। ताकि फिर व्यवहारिक रूप से उन योजनाओं के अनुसार अमलदरामद हो और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की पूर्ण आज्ञापालन भी। इस बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ शूरा के सदस्यों को अपना स्थान समझने और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की आज्ञापालन करने का आदेश देते हुए फ़रमाते है:-

"जब जमाअती मामलों में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की ओर से व्यवस्थानुसार बुलाया जाए कि मशवरा दो, तो उसमें देखें कि कितनी सावधानी की आवश्यकता है। मज्लिस शूरा में जब भी मशवरा के लिए बुलाया जाता है तो शूरा के सदस्यों पर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी डाली जाती है और एक पवित्र विभाग का उसे मेम्बर बनाया जाता है क्योंकि जमाअत में निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के बाद दूसरा पवित्र और महत्त्वपूर्ण विभाग निज़ाम-ए-शूरा ही है। जब ख़लीफ़ा-ए-वक़्त इसके लिए बुला रहा हो और जमाअत के लोग भी अपने में से इसके लिए लोगों को चुनकर भेज रहे हों कि जाओ दुनिया में अल्लाह की बातों को फैलाने, जमाअत के लोगों की तरबियत और अन्य समस्याएँ हल करने और मानवजाति की सेवा के लिए ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को मशवरे दो तो कितनी

ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। अगर यह सोच लेकर मज्लिस शूरा में बैठें तो मज्लिस की पूरी कार्यवाही सुनने और इस्तिग़्फ़ार करने और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजने के सिवा कोई दूसरा विचार मन में आ ही नहीं सकता। अत: जब भी उस मज्लिस में राय देने के लिए भेजा जाय तो पूरी ज़िम्मेदारी के साथ सही राय दें। क्योंकि ये रायें ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के पास भेजी जाएँगी और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त यह सुधारणा रखता है कि मेम्बरों ने पूरे ग़ौर से सोच-समझकर किसी विषय पर यह राय रखी होगी। इसी कारण मज्लिस शूरा की रायों को आमतौर पर कुछ ऐसे विषयों को छोड़कर जिनके बारे में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को पूर्णरूप से यह ज्ञात हो कि शूरा की इस राय को स्वीकार करने से जमाअत को नुकसान हो सकता है, ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जाता है। ऐसा करना क़ुर्आन की शिक्षा के विपरीत नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने इसकी इजाज़त दी हुई है।"

दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है कि:-

وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ

(सूर: आले इम्रान आयत नं. 160)

हे मुहम्मद! तू हर महत्त्वपूर्ण विषय में उन से मशवरा कर (फिर नबी को यह अधिकार भी दिया कि) जब तू कोई निर्णय कर ले तो फिर अल्लाह पर भरोसा

रख। अर्थात् यहाँ यह आदेश है कि महत्त्वपूर्ण विषयों में मशवरा अनिवार्य है और करना भी चाहिए। इस आदेश के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मशवरा किया करते थे बल्कि इस हद तक मशवरा किया करते थे कि हज़रत अबूहुरैरः रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा किसी को अपने साथियों से मशवरा करते नहीं देखा।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-2 पृ.195-196)

यहाँ यथा अवसर यह बात भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि निज़ाम-ए-शूरा रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदर्श के अनुकरण में ही क़ायम है, जो ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को कई विषयों में मशवरा दे सकती है। हालाँकि ख़लीफ़ा निर्णय लेने में स्वतन्त्र है। अतः हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते है:-

"इतिहास में आता है कि बदर के युद्ध के अवसर पर क़ैदियों से वर्ताव के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अधिकांश की राय ठुकराकर केवल हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को स्वीकार किया था। इसके अतिरिक्त दूसरे कई युद्धों के विषय में सहाबा के मशवरों को बहुत महत्त्व दिया। ओहद के युद्ध में सहाबा के मशवरे से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहाँ गए थे अन्यथा आप वहाँ जाकर युद्ध नहीं

करना चाहते थे। आपका तो यह विचार था कि मदीना में रहकर ही मुक़ाबला किया जाय। जब इस मशवरा के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हथियारों से सुसज्जित होकर निकले तब सहाबा को समझ आया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ फ़ैसला हुआ है, तो सहाबा ने कहा कि यहीं रहकर मुक़ाबला करते हैं। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नहीं, नबी जब एक निर्णय कर ले तो उससे पीछे नहीं हटता अब अल्लाह पर भरोसा करो और चलो। सुलह हुदैबियः के अवसर पर तमाम् सहाबा की यह राय थी कि मुआहदा पर हस्ताक्षर न किए जाएँ लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सब की राय को ठुकराकर उस पर हस्ताक्षर कर दिए। फिर देखें कि अल्लाह तआला ने उसके कैसे सुन्दर परिणाम पैदा किए। अतः मशवरा लेने का आदेश इसलिए है कि मामला पूरी तरह निथर कर सामने आ जाय, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि मशवरा माना ही जाय। हमारा शूरा का निज़ाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदर्शों पर ही आधारित है, जिसके अनुसार ख़ुलफ़ा मशवरा लेते हैं ताकि गहराई से मामलों को देखा जा सके। लेकिन यह आवश्यक नहीं कि शूरा के समस्त प्रस्तावों को स्वीकार भी किया जाय। इसलिए हमेशा यही होता है

कि शूरा की कार्यवाही के अन्त में विचाराधीन विषयों के बारे में जब रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है तो उस पर यह लिखा होता है कि शूरा कमेटी यह सिफ़ारिश करती है, उसको यह लिखने का अधिकार बिल्कुल नहीं कि वह यह निर्णय करती है। शूरा को केवल सिफ़ारिश का अधिकार है निर्णय का नहीं। निर्णय लेने का अधिकार केवल ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को है। इस पर किसी के मन में यह प्रश्न भी उठ सकता है कि फिर शूरा के आयोजन और मशवरा लेने का क्या फ़ायदा है और आजकल के पढ़े-लिखे दिमाग़ों में यह विचार जल्द आ जाता है तो जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ कि मज्लिस मुशावरत केवल एक मशवरा देने वाला विभाग है उसका काम पार्लियामेन्ट का नहीं है जहाँ क़ानून बनाये जाते हैं। आख़िरी फ़ैसले के लिए मामला हर हाल में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के पास जाता है और यह ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का ही अधिकार है कि वह निर्णय करे। यह अधिकार उसे अल्लाह तआला ने दिया है। लेकिन ज़्यादातर मशवरे माने भी जाते हैं जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ कि विशेष परिस्थितियों के अतिरिक्त जिनका ज्ञान ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को होता है कि कई परिस्थितियों में कई ऐसे कारण और मजबूरियाँ हों जिनके कारण वह मशवरा रद्द किया गया हो और उनको ख़लीफ़ा-ए-वक़्त बताना न चाहता हो। अतः

कहने का तात्पर्य यह है कि मशवरा लेने से लाभ होता है, क्योंकि भिन्न-भिन्न माहौल, समाज और क़ौम के पढ़े-लिखे और साधारण लोग मशवरा दे रहे होते हैं। आजकल जबकि जमाअत बहुत फैल चुकी है भिन्न-भिन्न देशों से उनके हालात के अनुसार मशवरे पहुँच रहे होते हैं जिनके आधार पर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को उन देशों के हालात् और जमाअत के लोगों के जीवनयापन और उनके दीनी और रूहानी स्तर तथा विचारधाराओं के बारे में ज्ञान हो जाता है। फिर जो भी स्कीम या कार्यक्रम बनाना हो तो उसके बनाने में मदद मिलती है। तात्पर्य यह कि अगर देशों की शूरा के बहुत से मशवरे मूलतः न भी माने जाएँ तब भी ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के देखने और सुनने से उनको फ़ायदा होता है। अतः मशवरा देने वाले का यह कर्तव्य है कि वह नेकनीयती से मशवरा दे और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का यह अधिकार भी है और कर्तव्य भी कि वह जमाअत से मशवरा ले।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-2 पृ. 197-199)

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की बात न मानने का परिणाम अपने आपको और अपनी नस्लों को इस्लाम और उसकी बरकतों से दूर करना है।

इस बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैः-

"अगर जमाअत की क़द्र नहीं करेंगे और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की बातों पर कान नहीं धरेंगे तो धीरे-धीरे न

केवल अपने आपको ख़ुदा तआला के फ़ज़्लों से वंचित कर रहे होंगे बल्कि अपनी नस्लों को भी इस्लाम से दूर करते चले जाएँगे। इसलिए सोचें और ग़ौर करें कि अगर यह दुनिया आपको दीन(इस्लाम) से दूर ले जा रही है तो यह इनाम नहीं बर्बादी है। यह अल्लाह तआला की नेमतों का इन्कार है और उसकी बेक़द्री है। हमें याद रखना चाहिए कि हमने इस ज़माने के उस इमाम की बैअत की है जिसके आने की हर क़ौम प्रतीक्षा कर रही है। जिसके लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़े प्यार भरे शब्द कहे हैं और सलाम भेजा है।

(अल् माजमुल औसत जिल्द-3 मिन इस्मुहू ईसा, हदीस नं. 4898 पृ. 383-384 – दारुल फ़िकर, अम्मान अरदन तबअ अव्वल सन् 1999 ई.)

तो क्या ऐसे महान व्यक्ति की ओर मंसूब होना कोई साधारण बात है? निःसन्देह यह बहुत बड़ा सम्मान है जो एक अहमदी को मिला है। इसलिए इस सम्मान की क़द्र करना हर अहमदी का कर्तव्य है, फिर यह क़द्र एक सच्चे अहमदी को ख़ुदा का शुक्रगुज़ार बन्दा बना देगा। इसके बाद वह ख़ुदा तआला के इनामों को पहले से बढ़कर उतरते देखेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर मन्सूब होना केवल ज़बानी ऐलान नहीं है बल्कि एक बैअत की शर्त है जो हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से की है और

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद उनके नाम पर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से बैअत की है। इस बैअत के विषय को हर अहमदी को समझने की ज़रूरत है। बैअत अपने आपको बेच देने का नाम है। अर्थात् अपनी सारी इच्छाओं और भावनाओं को खुदा तआला के आदेशों पर क़ुर्बान करने और उनके अनुसार अपने जीवन व्यतीत करने का एक प्रण है। यह अपनी इच्छाओं को पूर्णतः समाप्त करने का नाम है जो ख़ुदा तआला को हाज़िर नाज़िर जानकर किया जाता है। यदि उस दिन पर भरोसा हो जो ख़ुदा तआला से साक्षात् मिलने का दिन है जिस दिन हर प्रण के बारे में पूछा जाएगा तो इन्सान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर जिल्द-8 पृ. 191-192)

फिर आप ख़िलाफ़त से जुड़ाव रखने के बारे में फ़रमाते है:-

"यदि आपने तरक़्क़ी करनी है और संसार में विजयी होना है तो आपको मेरी यही नसीहत है और मेरा यही पैग़ाम है कि आप ख़िलाफ़त से जुड़ जाएँ और अल्लाह की इस ख़िलाफ़त रूपी रस्सी को मज़बूती से थामे रखें, क्योंकि हमारी सारी तरक़्क़ी का दारोमदार ख़िलाफ़त से जुड़ने में ही छुपा है।"

(रोज़नामा अलफ़ज़्ल रब्वा 30 मई सन् 2003 ई.)

"अल्लाह तआला ने आपको ख़िलाफ़त की नेमत दी है जो हर प्रकार की तरक़्क़ी के लिए एक

बाबरकत(कल्याणकारी) राह है। अल्लाह की इस रस्सी को मज़बूती से पकड़े रखें। एकता और अखण्डता की स्थापना और सफ़लताओं की प्राप्ति के लिए ख़िलाफ़त के दामन से हमेशा चिमटे रहें और पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी सन्तानों को भी इस महान नेमत से जुड़े रहने की नसीहत करते रहें। इसकी प्रतिष्ठा और स्थायित्व के लिए हमेशा प्रयासरत रहें और इस मार्ग में आने वाली हर एक क़ुर्बानी के लिए हमेशा तत्पर रहें।"

(मश्अल-ए-राह जिल्द-5 पृ. 32-33)

"याद रखें इस ज़माने में अल्लाह तआला के वादों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्पष्ट आदेशों के अनुसार ख़िलाफ़त से लगाव के परिणामस्वरूप ही आस्तिक और व्यवहारिक उन्नति होगी। चाहे कोई कितना ही बड़ा आलिम (विद्वान) या राजनीतिज्ञ या किसी रूहानी पद पर पहुँचा हुआ हो, अगर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से प्रेम का उसका वह मुक़ाम नहीं जो होना चाहिए तो जमाअती तरक़्क़ी या किसी की रूहानी तरक़्क़ी में उसके उस मुक़ाम का कणमात्र भी प्रभाव नहीं होता। अल्लाह तआला इस बात को गहराई से समझने का आप सबको सामर्थ्य प्रदान करे।"

(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला का मेम्बरान-ए-शूरा (पाकिस्तान) 2014 ई. के नाम पैग़ाम, अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 23-29 मई सन् 2014 ई. पृ. 1)

"इसी तरह हर अहमदी का यह काम है कि जब वह अपने आपको अहमदियत की ओर मन्सूब करता है तो चाहिए कि वह हमेशा निज़ाम-ए-जमाअत से प्रगाढ़ सम्बन्ध रखे, उस पर ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से वफ़ा और आज्ञापालन का सम्बन्ध रखना अनिवार्य है क्योंकि बैअत करते समय उसने यही प्रण किया था। अल्लाह का फ़ज़्ल है कि नए शामिल होने वाले विशिष्टत: वे लोग जिन्होंने पूरे विश्वास और विवेक से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे को समझकर क़बूल किया है वे अपने बैअत के प्रण और उसकी शर्तों पर भी ग़ौर करते रहते हैं। बहुत से लोग मुझे पत्र भी लिखते रहते हैं........"

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 30 अक्टूबर व 05 नवम्बर सन् 2015 ई. पृ.6)

"आज हर अहमदी जो यह दावा करता है कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में दाख़िल होकर मोमिनों की उस जमाअत में शामिल हो गया हूँ जिसके साथ ख़िलाफ़त का वादा है। उसका कर्तव्य है कि वह अल्लाह के आदेशानुसार हमेशा अपनी हालतों में पवित्र बदलाव पैदा करते रहने की कोशिश करता रहे। हर एक स्त्री-पुरुष, बच्चा, बूढ़ा और नौजवान यह सोच पैदा करे कि अल्लाह तआला ने हमें ख़िलाफ़त के इनाम से नवाज़ा है। हम उसके आज्ञाकारी बनने की यथासम्भव पूरी कोशिश करेंगे और उन इनामों

को पाने की पूरी कोशिश करेंगे जिनका अल्लाह ने मोमिनों से वादा किया है। हम उन सत्कर्मों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँगे जिनके करने का ख़ुदा तआला ने आदेश दिया है। याद रखें कि यदि आज हमने अपनी हालतों को बदलने और उस पर दृढ़ता से क़ायम रहने की ओर ध्यान न दिया तो धीरे-धीरे इस्लाम से इतनी दूर चले जाएँगे कि जहाँ से लौटना संभव नहीं। जिसका परिणाम यह होगा कि फिर हम उस इनाम के भी पात्र नहीं रहेंगे जो ख़िलाफ़त से सम्बद्ध है और उससे न केवल स्वयं वंचित हो रहे होंगे बल्कि अपनी नस्लों को भी उससे वंचित कर रहे होंगे......आज इस ज़िम्मेदारी को निभाते हुए और इस नेमत की रक्षा करते हुए हमने अपनी नस्लों में इसके महत्त्व को क़ायम करना है और अपनी नस्लों से यह प्रण लेना है कि चाहे जो कुछ भी हो, प्राण, धन, समय और अपनी समस्त इच्छाओं को न्योछावर करते हुए ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की रक्षा करनी है और हमेशा करते रहना है और अपनी नस्ल के साथ-साथ पूरी दुनिया में इस्लाम और अहमदियत के पैग़ाम को पहुँचाने की भरपूर कोशिश करते चले जाना है......."

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 24-30 मई सन् 2013 ई. पृ.8)

"आप में से हर एक का कर्तव्य है कि बहुत दुआएँ करे और अपने आपको ख़िलाफ़त से जोड़े रखे

और यह रहस्य हमेशा याद रखे कि सारी तरक़्क़ियों और कामयाबियों का राज़ ख़िलाफ़त से चिमटे रहने में ही है। वही व्यक्ति सिलसिले का लाभदायक अंग बन सकता है जो अपने आपको हमेशा इमाम से सम्बद्ध रखे। यदि कोई अपने आपको इमाम के साथ सम्बद्ध नहीं रखता तो चाहे वह दुनिया भर के ज्ञान जानता हो पर उसकी कोई हैसियत नहीं। जब तक आपकी सूझबूझ और योजनाएँ ख़िलाफ़त के मातहत रहेंगी और अपने इमाम के पीछे-पीछे उसके इशारों पर चलते रहेंगे अल्लाह तआला की सहायता और समर्थन आपको प्राप्त रहेगा।"

(रोज़नामा अलफ़ज़्ल 30 मई सन् 2003 ई. पृ. 2)

ख़िलाफ़त के साथ मदद करने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के सन्दर्भ से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैः-

"इस सिलसिले में एक ख़ुत्बे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुरब्बियान और उलमा को एक अति महत्त्वपूर्ण नसीहत फ़रमायी थी। फ़रमाया कि, हर मोमिन जो अपने सीने में इस्लाम का दर्द और सिलसिले से सद्भाव रखता है और चाहता है कि ख़ुदा तआला का सिलसिला नेकनामी के साथ दुनिया में क़ायम रहे और इस्लाम को वही प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त हो जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

ज़माने में हुई थी और इस काम के लिए हज़रत मसीह व महदी अलैहिस्सलाम की कोशिशें व्यर्थ न जाएँ, तो उसका कर्तव्य है कि ख़लीफ़ा के साथ दिन-रात मदद करके इस काम में लग जाए कि ज्ञान की दृष्टि से भी जमाअत के लोगों की कमज़ोरियाँ दूर हो जाएँ। ऐसे लोगों का कर्तव्य है कि जिस तरह शादी के अवसर पर लोग अपनी झोलियाँ फैला देते हैं (कई जगहों पर यह रिवाज होता है कि छुहारे बाँटे जाते हैं और लोग अपनी झोलियाँ फैला देते हैं) कि उसमें छुहारे गिरें। इसी तरह जब ख़लीफ़ा जमाअत के सुधार के लिए कुछ कहे तो उसे स्वीकार करें और जमाअत के लोगों के सामने उसे बार-बार दोहराएँ ताकि मोटी अक़्ल का आदमी भी समझ जाए और इस्लाम पर सही तौर पर चलने के लिए रास्ता पा ले।

(ख़ुत्बात-ए-महमूद जिल्द-18 पृ. 214-215 से उद्धृत)

(अलफ़ज़्ल इण्टरनेशनल 19-25 जून सन् 2015 ई. पृ.8)

"यह ख़िलाफ़त ही की नेमत है जो जमाअत की जान है इसलिए अगर सही ज़िन्दगी चाहते हो तो ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ सच्ची निष्ठा और वफ़ादारी के साथ चिमट जाएँ। आपकी हर तरक़्क़ी का राज़ ख़िलाफ़त से जुड़े रहने में ही छुपा है। इसलिए आप ऐसे बन जाएँ कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की चाहत आपकी चाहत हो जाए और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के क़दमों पर

आपका क़दम हो और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की ख़ुशनूदी पाना आपका मुख्य उद्देश्य बन जाए।"

(माहनामा ख़ालिद,सैयदना ताहिर नम्बर मार्च-अप्रैल सन् 2004 ई.पृ.4)

"हर अहमदी को यह कोशिश करनी चाहिए कि......वह ख़िलाफ़त की मज़बूती के लिए दुआएँ करे ताकि आप में ख़िलाफ़त की बरकतें हमेशा रहें.....अपने अन्दर विशेष बदलाव पैदा करें और पहले से बढ़कर ईमान और श्रद्धा में उन्नति करें.....अब अहमदियत का पक्षधर वही है जो नेक कर्म करने वाला और ख़िलाफ़त से चिमटे रहने वाला है।"

(ख़ुत्बा जुमा 27 मई सन् 2005 ई.)

"इस्लाम और अहमदियत की मज़बूती और उसके प्रचार-प्रसार और निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त को क़ायम रखने के लिए मरते दम तक कोशिश करनी है और उसके लिए हर बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी पेश करने के लिए तैयार रहना है और अपनी औलाद को हमेशा ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से जुड़े रहने की नसीहत करते रहना है, और उनके दिलों में ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की मुहब्बत पैदा करनी है। यह इतना बड़ा और महान उद्देश्य है कि इस प्रण पर पूरा उतरना और इसके तक़ाज़ों को निभाना, एक दृढ़संकल्प और जुनून चाहता है।"

(माहनामा अल् नासिर जर्मनी जून से सितम्बर सन् 2003 ई. पृ. 1)

"याद रखें कि वह सच्चे वादों वाला ख़ुदा है।

वह आज भी अपने प्यारे मसीह व महदी की जमाअत पर अपने प्रेम की छत्रछाया रखे हुए है। वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा, कभी नहीं छोड़ेगा, कभी नहीं छोड़ेगा। वह आज भी अपने प्यारे मसीह व महदी से किए हुए वादों को उसी तरह पूरा कर रहा है जिस तरह वह पहली ख़िलाफ़तों में करता रहा है। वह आज भी उसी तरह अपनी रहमतों और फ़ज़्लों से नवाज़ रहा है जिस तरह वह पहले नवाज़ता रहा है और आगे भी नवाज़ता रहेगा......इसलिए दुआएँ करते हुए और उसकी ओर झुकते हुए और उसका फ़ज़्ल माँगते हुए हमेशा उसकी चौखट पर पड़े रहें। यदि इस मज़्बूत कड़े को हमेशा मज़्बूती से पकड़े रहेंगे तो फिर कोई भी आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा। अल्लाह तआला सब को इसका सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन"

(इर्शाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 21 मई सन् 2004 ई.)

वस्तुतः एक सच्चे अहमदी की मुख्य ज़िम्मेदारी यह है कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की हर बात को ध्यान से सुने, क्योंकि यह आवाज़ एक सच्चे मोमिन की काया पलट देती है। उसमें अल्लाह तआला की सहायताएँ और उसकी बरकतें छुपी होती हैं। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त अल्लाह तआला के विशेष आदेश से बोलता है, उसके मुख से वे रहस्यज्ञान जारी किए जाते हैं जिनसे लोग वंचित होते हैं और ढूँढ़ने से नहीं मिल सकते। वह ख़ुदा के आदेश से मोमिनों को समय की

मुख्य आवश्यकतानुसार काम करने का आदेश देता है और इस तरह का साँचा एक ख़लीफ़ा ही बना सकता है जिसमें पुनः सलाहियत के साथ कर्म ढल सकते हैं। उन्नति के सारे मार्ग ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के मार्गदर्शन के द्वारा ही सही तौर पर तय किए जा सकते हैं। इसलिए ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के ज्ञान से भरे हुए ख़ुत्बे, लैक्चर्स, क्लासें और संदेशों इत्यादि को नियमित और ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए और बच्चों सहित परिवार के सभी सदस्यों को भी सुनाना चाहिए और इसके लिए अन्य रिश्तेदारों, मित्रों और साथ उठने-बैठने वालों को भी प्रेरित करना हर अहमदी स्त्री-पुरुष का कर्तव्य है। तभी तो ज्ञात होगा कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त क्या कह रहा है, वह हम से क्या चाहता है, हम से क्या आशा रखता है इत्यादि, इत्यादि। जो इन आदेशों और नसीहतों को कोशिश करके नहीं सुनता वह पूर्णतः आज्ञापालन के सौभाग्य से वंचित है, जो लोक-परलोक में नुकसान की पूर्ति न हो पाने का कारण बनता है।

एक मोमिन की प्रतिष्ठा तो केवल ख़िलाफ़त की आज्ञापालन है, उसका ओढ़ना-बिछौना ख़िलाफ़त से वफ़ादारी और सम्बन्ध है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:-

> "अल्लाह तआला का हाथ जमाअत के सिर पर होता है, इसमें यही तो राज़ है। अल्लाह तआला तौहीद(एकेश्वरवाद) को पसन्द करता है और यह एकत्व तब तक नहीं पैदा हो सकता जब तक आज्ञापालन न की जाय। पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सहाबा एक से बढ़कर एक

बुद्धिमान थे, ख़ुदा ने उनकी प्रकृति ही ऐसी रखी थी। वे राजनीति के क़ानून-क़ायदों को भी अच्छी तरह जानते थे। क्योंकि जब हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और अन्य सहाबा किराम ख़लीफ़ा बने और उन्हें सत्ता मिली तो उन्होंने जिस सुन्दरता और सुशासन से सत्ता की भारी भरकम ज़िम्मेदारी को सँभाला उससे अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है कि उनमें सलाहकार बनने की कितनी योग्यता थी। लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने उनका यह हाल था कि जहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ फ़रमाया अपने सारे विचार-विमर्शों और विवेकों को उसके सामने तुच्छ समझा और जो कुछ पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसी को करना अति आवश्यक ठहराया......नासमझ विरोधियों ने कहा है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैलाया गया, पर मैं कहता हूँ कि यह सही नहीं है। सच बात यह है कि दिल की नालियाँ आज्ञापालन के पानी से लबरेज़ होकर बह निकली थीं। यह उस आज्ञापालन और एकता का परिणाम ही था कि उन्होंने दूसरों के दिलों को जीत लिया....... तुम जो मसीह मौऊद की जमाअत कहलाकर सहाबा की जमाअत से मिलने की उम्मीद रखते हो तो अपने अन्दर सहाबा का रंग पैदा करो। आज्ञापालन हो तो वैसी

हो, आपस में मुहब्बत हो तो वैसी हो, तात्पर्य यह कि हर रंग और हर हाल में तुम वही आदत अपनाओ जो सहाबा की थी।"

(तफ़्सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिल्द-2 पृ. 246-248, तफ़्सीर सूर: निसा आयत 60)

अत: अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य दे कि हम नेमत-ए-ख़िलाफ़त का यथोचित सम्मान करने वाले हों और हम अपने प्रण को पूरा कर सकें और जीवन की आख़िरी साँस तक वफ़ादारी के साथ ख़िलाफ़त से चिमटे रहें ताकि यह नेमत पीढ़ी दर पीढ़ी हमें नसीब रहे। आमीन। अल्लाह तआला हम सबको यह भी सामर्थ्य दे कि हम ख़िलाफ़त की बातों को न सिर्फ़ सुनने वाले हों बल्कि उन पर चलने वाले भी हों। ख़ुदा करे कि हम उसकी इच्छानुसार नेमत-ए-ख़िलाफ़त को सँभालने वाले हों।

ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान

ख़ुदा का यह एहसान है हम पे भारी
कि जिसने है अपनी यह नेमत उतारी

न मायूस होना घुटन हो न तारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान जारी

नबूवत् के हाथों जो पौधा लगा है
ख़िलाफ़त के साये में फूला फला है

यह करती है इस बाग़ की आबयारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान जारी

ख़िलाफ़त से कोई भी टक्कर जो लेगा
वह ज़िल्लत की गहराई में जा गिरेगा

ख़ुदा की यह सुन्नत अज़ल से है जारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान जारी

ख़ुदा का है वादा ख़िलाफ़त रहेगी
यह नेमत तुम्हें ता क़यामत मिलेगी

मगर शर्त इसकी इताअत गुज़ारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान जारी

मुहब्बत के जज़्बे वफ़ा का क़रीना
उख़ूवत् की नेमत तरक़्क़ी का ज़ीना

ख़िलाफ़त से ही बरकतें हैं यह सारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान जारी

इलाही हमें तू फ़िरासत अता कर
ख़िलाफ़त से गहरी मुहब्बत अता कर

हमें दुःख न दे कोई लग़्ज़िश हमारी
रहेगा ख़िलाफ़त का फ़ैज़ान जारी

(आदरणीया साहिबज़ादी अमतुल क़ुद्दूस बेगम साहिबा)